सम्पादकीय युगनिर्माणी आस्थाओं का आरोपण समय की माँग है 2

सवा लाख कन्याओं को गढ़ने का विराट अभियान 5

शान्तिकुञ्ज-देसंविवि में पधारे भारत के निर्वाचन आयुक्त श्री ज्ञानेश कुमार एवं नॉर्वेजियन नोबल समिति के डिप्टी लीडर डॉ. असले टोजे 7

देव संस्कृति विश्वविद्यालय और निहंग सिक्ख समाज का समागम 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

E-mail: news@awgp.org

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

16 जुलाई 2024

वर्ष : 37, अंक : 02

प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार

प्रकाशन तिथि : 12 जुलाई 2024

वार्षिक चंदा : ₹ 80/-

वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-

प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

तुम सब श्रेष्ठ साँचा बन जाओ

परम पूज्य गुरुदेव द्वारा कही गई अपनों से अपनी बात

मेरे प्यारे बच्चो!

तुम सभी के बीच हमारे आने का एक ही उद्देश्य है कि हम समाज को सही व्यक्ति देकर जाएँ। हमने जीवन भर व्यक्ति के मर्म को छुआ है व अपना ब्राह्मण स्वरूप खोलकर रख दिया है। नतीजा यह है कि हमारे साथ अनगिनत आदमी जुड़े। तुम यदि सही अर्थों में जुड़े हो तो अपना भीतर वाला हिस्सा भी लोकसेवी का बना लो व समाज के लिए कुछ कर डालने का संकल्प ले डालो।

पचास आदमी गाँधी के, बुद्ध के साथ थे। वे युग-परिवर्तन कर सके, क्योंकि उनके पास काम के इंसान थे। विवेकानन्द के पास निवेदिता व कुछ काम के व्यक्ति थे। आज जहाँ देखो, वहीं जानवर नज़र आते हैं। यदि काम के इनसान होते तो जमीन पलट दी गई होती। सारे समाज का कायाकल्प हो गया होता।

गाँधी जी ने अपने साथ रहने वाले व्यक्तियों का व्यक्तित्व बना दिया था। जो उनसे पूरी तरह जुड़े धन्य हो गए, श्रेय-सौभाग्य के अधिकारी बने। तुम भी सही अर्थों में जुड़ जाओ तो तुम सबका व्यक्तित्व बन जाए, सभी सँवर जाएँ। इसके लिए हमें तुमसे और कुछ भी नहीं, केवल व्यक्तित्व की साधना व तुम्हारा निष्काम समर्पण चाहिए।

समर्पण-विसर्जन की साधना

आज से 63 वर्ष पूर्व हमने वसन्त पर्व पर अपने भगवान् (गुरु) से दीक्षा ली थी। यह कहा था कि अब 'मैं' समाप्त होता हूँ व 'आप' जीवित होते हैं। आपकी इच्छा प्रमुख, मेरी इच्छा गौण। समर्पण किया था हमने, उसकी अनगिनत उपलब्धियाँ हैं। हमारा व्यक्तित्व हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने शानदार बना दिया। तुम सबका व्यक्तित्व भी ऐसा ही बन जाए, यदि तुम मन व आत्मा से समर्पण कर दो।

हमने जो समर्पण किया, उसके बदले में हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने हमारे अन्दर प्रभावोत्पादकता भर दी। वाणी में, लेखनी में, व्यक्तित्व में, दैनन्दिन आचरण में। यही तुम्हारे अन्दर भी आ जाएगी। बस कसौटी एक ही 'अहं' को गलाना, विसर्जन, समर्पण। जब तक अहंकार जिन्दा है, आदमी दो कौड़ी का है। जिस दिन यह मिट जाएगा आदमी बेशकीमती हो जाएगा। 'अहं' ही है, जिसके कारण जीवन में न सिद्धान्त, न सेवा, न आदर्श आ पाते हैं। व्यक्ति लोकसेवा के क्षेत्र में प्रवेश करके भी उच्छृंखल स्तर का अनगढ़ बना रहता है।

तुम्हें ईसामसीह की बात सुनाता हूँ। उनके शिष्य ने उनसे कहा कि हम भी आपके समान महान और बड़ा बनना चाहते हैं। हम क्या करें? तो उन्होंने एक ही जवाब दिया-बच्चो! मैं जीवन भर तिनका बना, विनम्र बना, गला, इसलिए इतने बड़े वृक्ष के रूप में विकसित हो सका। अपनी इच्छा समाप्त कर दीं तो सही अर्थों में बड़े बन गए। पहले तुम सब भी तिनके के समान छोटे बनो। तुम वैसा बन गए तो पेड़ बन सकोगे, इसमें कोई सन्देह नहीं है।

अपनी इच्छा, बड़प्पन, कामना, स्वाभिमान को गलाने का नाम समर्पण है, जिसे तुमसे करने को मैंने कहा है व इसकी अनन्त फलश्रुतियाँ सुनाई हैं। जो स्वयंसेवक जितना बड़ा हैं, वह उतना ही विनम्र है, उतना ही महान बनने के बीजांकुर उसमें हैं।

वाणी संयम की साधना

व्यक्ति को पहचानने की एक ही कसौटी है कि उसकी वाणी घटिया है या बढ़िया। व्याख्यान कला अलग है। मंच पर तो सभी शानदार मालूम पड़ते हैं। प्रत्यक्ष सम्पर्क में आते ही व्यक्ति नंगा हो जाता है। जो प्राण वाणी में है, वही परस्पर चर्चा- व्यवहार में परिलक्षित होता है। वाणी ही व्यक्ति का स्तर बताती है। प्याज खाने और शराब पीने वाले के मुँह से जो बदबू आती है, वाणी की कठोरता ठीक इसी प्रकार मुँह से निकलती है। अशिष्टता छिप नहीं सकती। यह वाणी से पता चल ही जाती है।

व्यक्तित्व बनाने के लिए वाणी की विनम्रता जरूरी है। अनगढ़ता मिटाओ, दूसरों का सम्मान करना सीखो। तुम्हें प्रशंसा करना आता ही नहीं, मात्र निन्दा करना आता है। व्यक्ति के अच्छे गुण देखो, उनका सम्मान करना सीखो, तुरन्त तुम्हें परिणाम मिलने चालू हो जाएँगे। वाणी की विनम्रता का अर्थ चाटुकारिता नहीं है। फिर समझो इस बात को। चापलूसी और वाणी की मिठास दोनों नितान्त भिन्न चीजें हैं।

वाणी व्यक्तित्व का हथियार है। सामने वाले पर वार करना हो तो तलवार नहीं, कलाई नहीं, हिम्मत की पूछ होती है। हिम्मत न हो तो हाथ में तलवार भी हो, तो बेकार है। यदि वाणी सही है तो तुम्हारा व्यक्तित्व जीवन्त हो जाएगा, बोलने लगेगा व सामने वाले को अपना बना लेगा। अपनी विनम्रता, दूसरों का सम्मान व बोलने में मिठास, यही व्यक्तित्व के प्रमुख हथियार हैं। इनका सही उपयोग करोगे तो व्यक्तित्व वजनदार बनेगा।

हमारी एक ही महत्त्वाकाँक्षा है कि हम सहस्रभुजा वाले सहस्रशीर्षा पुरुष बनना चाहते हैं। तुम सब हमारी भुजा बन जाओ, हमारे अंग बन जाओ, यह हमारी मन की बात है। गुरु-शिष्य एक- दूसरे से अपने मन की बात कहकर हल्के हो जाते हैं। हमने अपने मन की बात तुमसे कह दी। अब तुम पर निर्भर है कि तुम कितना हमारे बनते हो? पति-पत्नी की तरह, गुरु व शिष्य की आत्मा में भी परस्पर ब्याह होता है, दोनों एक-दूसरे से घुल-मिलकर एक हो जाते हैं।

समर्पण का अर्थ है दो का अस्तित्व मिटाकर एक हो जाना। तुम भी अपनी क्षुद्र महत्त्वाकांक्षाओं को हमारी अनन्त आध्यात्मिक महत्त्वाकाँक्षाओं में विलीन कर दो। जिसका अहं जिन्दा है, वह वेश्या है। जिसका अहं मिट गया, वह पतिव्रता है। देखना है कि हमारी भुजा, आँख, मस्तिष्क बनने के लिए तुम कितना अपने अहं को गला पाते हो? इसके लिए निरहंकारी बनो। स्वाभिमानी तो होना चाहिए, पर निरहंकारी बनकर। निरहंकारी का प्रथम चिह्न है वाणी की मिठास।

तुम्हें कुम्हार, तुम्हें ही साँचा बनना है

तुम्हीं को कुम्हार व तुम्हीं को चाक बनना है। हमने तो अनगढ़ सोना, चाँदी ढेरों लाकर रखा है, तुम्हीं को साँचा बनकर सही सिक्के ढालना है। साँचा सही होगा तो सिक्के भी ठीक आकार के बनेंगे। आज दुनिया में पार्टियाँ तो बहुत हैं, पर किसी के पास कार्यकर्त्ता नहीं हैं। 'लेबर' सबके पास है, पर समर्पित कार्यकर्ता जो साँचा बनता है व कई को बना देता है अपने जैसा, कहीं भी नहीं है। हमारी यह दिली ख्वाहिश है कि हम अपने पीछे अच्छे व्यक्ति छोड़कर जाएँ। इन सभी को सही अर्थों में 'डाई' एक साँचा बनना पड़ेगा तथा वही सबसे मुश्किल काम है। रॉ मेटेरियल तो ढेरों कहीं भी मिल सकता है, पर 'डाई' कहीं- कहीं मिल पाती है। श्रेष्ठ कार्यकर्ता श्रेष्ठ 'डाई' बनता है। तुम सबसे अपेक्षा है कि अपने गुरु की तरह एक श्रेष्ठ साँचा बनोगे।

श्रम-सहकारिता का सम्मान करो

तुमसे दो और अपेक्षाएँ हैं- एक श्रम का सम्मान। यह भौतिक जगत का देवता है। मोती-हीरे श्रम से ही निकलते हैं। दूसरी अपेक्षा यह कि सेवा- बुद्धि के विकास के लिए सहकारिता का अभ्यास। संगठन शक्ति सहकारिता से ही पहले भी बढ़ी है, आगे भी इसी से बढ़ेगी।

हमारे राष्ट्र का दुर्भाग्य यह है कि श्रम की महत्ता हमने समझी नहीं, कभी उसका मूल्यांकन किया ही नहीं। हमारा जीवन निरन्तर श्रम का ही परिणाम है। बीस-बीस घण्टे तन्मयतापूर्वक श्रम हमने किया है। तुम भी कभी श्रम की उपेक्षा मत करना। मालिक बारह घण्टे काम करता है, नौकर आठ घण्टे तथा चोर चार घण्टे काम करता है। तुम सब अपने आपसे पूछो कि हम तीनों में से क्या हैं? कठोर परिश्रम करो, अपनी योग्यताएँ बढ़ाओ व निरंतर प्रगति पथ पर बढ़ते जाओ।

दूसरी बात सहकारिता की है। इसी को पुण्य परमार्थ, सेवा, उदारता कहते हैं। अपना मन सभी से मिलाओ। मिल-जुलकर रहना, अपना सुख बाँटना, दुःख बँटाना सीखो। यही सही अर्थों में ब्राह्मणत्व की साधना है। मन से ब्राह्मणत्व की साधना करोगे तो पहले ब्राह्मण बनोगे, फिर साधु अपने आप बन जाओगे। पीले कपड़े पहनते हो कि नहीं, पर मन को पीला कर लो। सेवाबुद्धि का, दूसरों की पीड़ा अनुभव कर भाव-सम्वेदना का विकास करना ही साधुता को जगाना है। आज इस वर्ष गुरुपूर्णिमा पर्व पर तुमसे कुछ अपेक्षाएँ हैं। आशा है तुम इन्हें अवश्य पूरा करोगे। यही आत्मा की हमारी वाणी है, जो तुमसे कुछ कराना चाहती है, इतिहास में तुम्हें अमर देखना चाहती है। देखना है तुम कितना हमारी बात को जीवन में उतार पाते हो।

सम्पादकीय

युगनिर्माणी आस्थाओं का आरोपण समय की माँग है

युग के महासमर में प्यार हमारी पूँजी है, विचार और संवेदनाएँ हमारे अस्त्र-शस्त्र हैं

अवसर अनुकूल है

आषाढ़, श्रावण, भाद्रपद मास का यह समय ऊर्वरता से भरापूरा है। इन दिनों भीषण गर्मी के बाद जब बादल शीतल बूँदें बरसाते हैं तो सर्वत्र आनन्द छा जाता है। जब तपती सूखी धरती पर हरियाली छाने लगती है तो चतुर किसान मौसम की अनुकूलता पाकर गुड़ाई, बुवाई, निराई के कामों में जुट जाते हैं। वर्तमान समय में हम पर्यावरण की इसी अनुकूलता का लाभ उठाने के लिए पूरे मनोयोग और उत्साह के साथ जुट गए हैं। इन्हीं दिनों अपने मिशन का वृक्षगंगा अभियान भी पूरे जोश और उत्साह के साथ गतिशील हो गया है। हम गुरुपूर्णिमा से श्रावणी पूर्णिमा तक के एक मास को 'वृक्षारोपण मास' के रूप में मनायेंगे और लोगों में पर्यावरण संरक्षण के प्रति संवेदनाएँ जगाने वाली, जागरूकता बढ़ाने वाली विविध योजनाओं एवं कार्यक्रमों के अंतर्गत लाखों-करोड़ों वृक्षों की पौध लगायेंगे।

वर्तमान समय धरती की ऊर्वरता की दृष्टि से ही नहीं, मानवीय मन में आस्थाओं के आरोपण की दृष्टि से भी अनुकूल अवसर लेकर आया है। आषाढ़ पूर्णिमा-गुरुपूर्णिमा श्रेष्ठता के प्रति श्रद्धा के आरोपण की वेला है। यह अपनी मार्गदर्शक सत्ता, अपने गुरुदेव के प्रति समर्पण, विसर्जन, विलय की भावना को प्रगाढ़ करने की विशिष्ट वेला है। यह वह समय है जब यदि अपने इष्ट-आराध्य के प्रति सच्चा समर्पण किया जाए तो व्यक्ति की नर से नारायण, मानव से महामानव बनने की यात्रा का शुभारम्भ हो जाता है।

परम पूज्य गुरुदेव लिखते हैं-

हमने वसन्त पर्व पर अपने भगवान् से दीक्षा ली थी। यह कहा था कि अब 'मैं' समाप्त होता हूँ व 'आप' जीवित होते हैं। आपकी इच्छा प्रमुख, मेरी इच्छा गौण। समर्पण किया था हमने, उसकी अनगिनत उपलब्धियाँ हैं। हमारा व्यक्तित्व हमारी मार्गदर्शक सत्ता ने शानदार बना दिया। तुम सबका व्यक्तित्व भी ऐसा ही बन जाए, यदि तुम मन व आत्मा से समर्पण कर दो।"

गुरुसत्ता की आकांक्षा

हमारे समर्पण की सार्थकता परम पूज्य गुरुदेव और परम वन्दनीया माताजी के महान उद्देश्यों के साथ जुड़ी है। हम सामान्य नहीं हैं, उस महान अवतारी चेतना के अंग-अवयव हैं जो युग निर्माण जैसे विराट लक्ष्य को लेकर अवतरित हुई है। हमारे मन में यह विश्वास प्रबल होना चाहिए कि हमारा जन्म पेट-प्रजनन तक सीमित रहकर अपना बहुमूल्य जीवन व्यर्थ गँवा देने के लिए नहीं हुआ है, हमें एक विशेष प्रयोजन के लिए चुना और गढ़ा गया है। हमारे मन में परम पूज्य गुरुदेव के दिव्य संरक्षण और अनुदानों के प्रति गहरा विश्वास होना चाहिए।

सेनाएँ जीतती भी हैं और हारती भी हैं। सैनिकों को अपना सर्वोच्च बलिदान भी देना पड़ता है। लेकिन उनका जीवन उनके महान उद्देश्य के लिए सदैव याद किया जाता है। मरते तो सभी हैं, सुख-दुःख सबके जीवन में आते हैं। दुःख से, बीमारी से, दुर्घटनाओं में भी लोग मरते ही हैं। लेकिन जो लोकमंगल के लिए जीवन खपाते और बुलंद हौसलों के साथ आगे बढ़कर चुनौतियों का सामना करते हैं, उनकी कष्ट-कठिनाइयाँ तप बन जाती हैं। जैसे तप कर आम के फल में मिठास आती है, जैसे तप से पक कर फसलें स्वादिष्ट और पोषक तत्त्वों से भरपूर होती जाती हैं, वैसे ही लोकमंगल के लिए, श्रेष्ठ उद्देश्यों के लिए जीवन लगाने वालों को जो सुख-संतोष प्राप्त होता है उसकी दिव्य अनुभूतियों को शब्दों में व्यक्त करना कठिन है। आधी धोती पहन कर जीवन व्यतीत करने वाले महात्मा गाँधी के आत्मसंतोष की अनुभूति अपने स्वार्थ और अहंकार की पूर्ति के लिए सुख-साधनों के अंबार लगा देने में, ऊँची अट्टालिकाएँ खड़ी करने में जीवन लगा देने वाले कदापि नहीं कर सकते। घर की पूँजी लगाकर साधारण-सा जीवन जीते हुए अनाथ बच्चों को पालने वाली डॉ. सिंधुताई सपकाल और श्री कैलाश सत्यार्थी जैसे लोकसेवियों के जीवन के आनन्द और आत्म संतोष का वे स्पर्श भी नहीं कर सकते।

हम सब जानते हैं कि परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वन्दनीया माताजी का जीवन तथा उनका मिशन मानवमात्र के उज्ज्वल भविष्य के लिए समर्पित है। मानव में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण हमारा लक्ष्य है। ऐसी महान अवतारी चेतना के साथ जुड़ने के अपने सौभाग्य को हम समझें और अपनी व्यक्तिगत आकांक्षाओं को क्रमशः घटाते हुए अपने समय, प्रभाव, ज्ञान, पुरुषार्थ और साधनों को लोकमंगल के लिए अर्पित करने का साहस बढ़ाते चलें, इसी में हमारे शिष्यत्व की सार्थकता है। हम सब प्रस्तुत गुरुपूर्णिमा पर्व पर अपनी गुरुसत्ता को यह सार्थक श्रद्धाञ्जलि अर्पित कर सकते हैं। गुरुदेव-माताजी हर पल हमारे साथ हैं, उनके अनुदान हमें सतत मिलते रहेंगे, प्रगति पथ पर हमें निरंतर बढ़ाते रहेंगे यह विश्वास हमारे मनों में हर पल बढ़ता ही जाना चाहिए।

आस्था संकट-सबसे बड़ी चुनौती

परम पूज्य गुरुदेव ने आस्था संकट को इस युग की सबसे बड़ी चुनौती कहा है। उनका संकल्प"मानव में देवत्व का उदय और धरती पर स्वर्ग का अवतरण" तभी साकार होगा, जब जन-जन में अपने सृजेता की सामर्थ्य, अपनी क्षमताओं, उच्च आदर्श, जीवन के अनुशासन के प्रति आस्था जाग जाये। आज लोग पूजा-पाठ, व्रत-अनुष्ठान, कथा-प्रवचन करते, सुनते तो पहले से कहीं ज्यादा दिखाई देते हैं, लेकिन जनआस्थाओं को अभीष्ट दिशा देते दिखाई नहीं पड़ते। धर्म व्यवसाय बनता जा रहा है, तीर्थ पर्यटन के केन्द्र बनते जा रहे हैं, भक्तगण अपने लोभ, मोह, अहंकार की पूर्ति के लिए सस्ते चढ़ावों से भगवान को रिझाने के गोरखधंधे में व्यस्त दिखाई देते हैं।

परम पूज्य गुरुदेव कहते हैं कि यदि जनआस्थाओं को सही दिशा दी जा सके तो लोगों में 'जियो और जीने दो' की प्रवृत्ति जाग जाये। लोग भ्रम-भ्रांतियों से उबरें और अपने कर्म को पवित्र बनाने व कौशल को बढ़ाने में जुट जायें। श्रम और सहकारिता का सम्मान होने लगे तो भारतवर्ष को फिर से सोने की चिड़िया बनते देर नहीं लगेगी। अनगढ़ आकांक्षाएँ तो कुबेर भी अपना सारा धन लुटाकर पूरी नहीं कर सकते, लेकिन मनुष्य को भगवान ने इतनी सामर्थ्य दी है कि यदि वह उनका सही-सही उपयोग करे तो अपने साथ अनेकों का भला कर सकता है। यह विश्वास हमें जन-जन में जगाना होगा। यदि यह विश्वास जाग जाये तो स्वार्थ-संकीर्णताओं के बंधन टूटते नज़र आएँगे। फिर कोई क्यों भय, आतंक, भ्रष्टाचार, अनाचार का सहारा लेकर समाज में अव्यवस्थाएँ उत्पन्न करेगा?

हमारा युगधर्म-आत्मीयता विस्तार

हमारा मिशन और हमारा जीवन आस्था संकट के निवारण के लिए अधिक से अधिक समर्पित होना चाहिए। यदि हमारे स्वयं के मनों में यह आस्था प्रबल होने लगे तो युग निर्माण की दिशा में साहसी कदम स्वयं बढ़ते चले जाएँगे। यदि इस दिशा में हमारे संकल्प उभरते हैं तो गुरुपूर्णिमा पर्व पर पावन गुरुसत्ता को हमारी सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

आस्था संकट का निवारण उन्हीं सूत्रों के सहारे संभव है जो हमारी गुरुसत्ता ने अपनाए और हमें अपना बना लिया। श्रेष्ठता के प्रति लोगों की श्रद्धा और विश्वास बढ़ाने के लिए हमें घर-घर जाना होगा। अपने प्यार और आत्मीयता के सहारे उनका विश्वास जीतना होगा। प्यार ही वह पूँजी है जिसे लुटाकर गुरुदेव-माताजी ने करोड़ों लोगों का जीवन बदल दिया। उन्होंने एक विराट देव परिवार खड़ा कर दिया। आज के हताशा-निराशा भरे जीवन में प्यार वह संजीवनी है जिसकी तलाश हर किसी को है। आत्मीयता विस्तार का नाम अध्यात्म है। परम पूज्य गुरुदेव कहते हैं-

"आप सबको अपना मानना शुरु कीजिए। अपनेपन के दायरे को बढ़ा दीजिए। अभी तो आपके अपनेपन का दायरा शरीर तक है, इसलिए शरीर में सुख है, तो आप सुखी हैं, शरीर में दुःख है तो आप दुःखी हैं। अभी तो आपने अपना दायरा अपने कुटुंब तक सीमित रखा है। कुटुंबियों को अच्छी नौकरी मिल गई, खाना मिल गया, इज्जत मिल गई, तो आप खुश हैं और अगर नुकसान हो गया तो आप नाखुश हैं। अतः आप एक काम कीजिए, अपने इस छोटे से दायरे को बढ़ा दीजिए। आप अपने आप को सारे विश्व तक फैला दीजिए, तब सारी चीजें आपकी हो जाएँगी।

प्यार का वास्तविक स्वरूप सेवा में निखरता है। जिसको आप प्यार करते हैं, उसकी आप सेवा करना चाहते हैं। प्यार अपने प्यारे को सुखी बनाने के लिए स्वयं कष्ट उठाता है और सामने वाले प्रेमी को सुखी बनाता है।"

गुरुसत्ता के सतयुगी संकल्पों को साकार करने के लिए आत्मीयता विस्तार की ही सबसे बड़ी आवश्यकता है। हम अपने पड़ोसियों के, रिश्तेदारों के या जो भी हमारे संपर्क में आते हैं उनके सुख-दुःख के साझेदार बनें, उनके कष्ट-कठिनाइयों का समाधान सुझायें, तभी हम उनका विश्वास जीत सकते हैं। हम कहें ही नहीं, उनकी सुनें भी और उनकी समस्याओं का समाधान करते हुए उनमें एक नया आत्मविश्वास जगायें। हमारी भाव-संवेदना और परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को साथ लेकर घर-घर पहुँचेंगे तो निश्चित ही विचार क्रान्ति की एक नई लहर पैदा होती चली जाएगी।

निष्काम कर्मयोग की साधना

सेवा के पथ में फूल ही नहीं, शूल भी भरपूर मिलते हैं। लेकिन हमें 'नेकी कर दरिया में डाल' की नीति अपनानी होगी। आत्मीयता विस्तार तो एक साधना है। हमें इसे गुरुकार्य मानकर करना चाहिए। श्रेय, सफलता, यश-अपयश सब अपने इष्ट के-आराध्य के चरणों में समर्पित कर देना चाहिए। अर्जुन की तरह फल की इच्छा न रखते हुए हम केवल अपने कर्त्तव्यों का पालन करते चलें। स्वयं योगेश्वर कृष्ण हमारे पथ-प्रदर्शक हैं। उनके दिशा-निर्देशों का पालन करते रहे तो युग के इस महाभारत में विजय देवत्व की ही होगी, यह सुनिश्चित है।

भावभरी अपील/विनम्र अनुरोध...

भूलोक के कल्पवृक्ष-'गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज' को ऋषियुग्म परमपूज्य गुरुदेव एवं परमवंदनीया माताजी ने अपने हाथों से रोपा है। अपनी सम्मिलित तप-शक्ति से खाद-पानी देकर इसे बड़ा किया है। यह दिव्य भी है और महान भी। इसके अंतःस्थल में संभावनाओं और सिद्धियों के भण्डार भरे पड़े हैं। इसकी प्रचण्ड ऊर्जा, प्रकाश, ज्ञान, दिव्यता व चेतना से भारतवर्ष ही नहीं समस्त संसार के जड़ और चेतन को प्रेरणा मिल रही है। ऐसा और कोई उदाहरण नहीं है, जहाँ साधना की धुरी पर करोड़ों लोगों का एक संगठन बना हो एवं उसने सतयुग की वापसी का संकल्प लिया हो। यह दिव्य क्षेत्र सहस्राधिक वर्षों तक मानवता को नवीन प्राण देते रहने के लिए कृत-संकल्पित है।

शान्तिकुञ्जरूपी कल्पवृक्ष से वह सब कुछ उपलब्ध हो सकता है जो कल्पवृक्ष से अभीप्सित है, परन्तु कल्पवृक्ष से भी कुछ प्राप्त करने का एक निश्चित विधि-विधान है। शर्त एक ही है कि यहाँ रहकर साधनात्मक दिनचर्या अपनाई जाये। इसकी छाया में रहकर साधनापरायण जीवन जीने वालों की झोली मनचाहे अनुदानों-वरदानों से भरपूर हुए बिना नहीं रहती।

वर्तमान ग्रीष्मकाल के तीन-चार महीने स्कूलों/कॉलेजों में ज्यादातर अवकाश आदि रहने के कारण बहुतायत परिजनों/शिविरार्थियों/दर्शनार्थियों के यहाँ आने का आग्रह-अनुरोध होने पर शान्तिकुञ्ज व्यवस्था तंत्र के सम्मुख एक चुनौती खड़ी हो जाती है। शान्तिकुञ्ज में आवासीय उपलब्धता वर्तमान में सीमित रूप में है। आवासीय व्यवस्था के विस्तार के कार्यक्रम भी प्रगति पर हैं। कई भवन निमार्णाधीन प्रक्रिया में हैं। इनके पूर्ण होने में अभी चार-पाँच महीने अथवा उससे अधिक लगने की संभावना से भी इंकार नहीं किया जा सकता है।

इसे ध्यान में रखते हुए सत्रों में आने के इच्छुक परिजनों से यह आग्रह है कि पूर्व सूचना भेजकर स्वीकृति प्राप्त कर लेने के बाद ही गुरुधाम आएँ। शिविरार्थियों की संख्या यहाँ उपलब्ध आवासीय स्थिति पर आधारित है। असमय और अस्त-व्यस्त मनःस्थिति लेकर आने पर प्रभावी प्रशिक्षण एवं साधनात्मक मनोवृत्ति का निर्माण दोनों ही नहीं बन पड़ते। इसलिए इस अस्त-व्यस्तता को जितना दूर किया जाये, उतना ही अच्छा है। यह भावभरी अपील मात्र इस उद्देश्य से है कि अपने गायत्री परिजनों को किसी तरह की कष्ट-कठिनाई का सामना न करना पड़े।

अतएव आत्मीय परिजन उक्त व्यवस्था तंत्र की परेशानी एवं विवशता को समझेंगे तथा अन्य लोगों को भी समझायेंगे ऐसा सविनम्र भावभरा अनुरोध आपसे होगा।

व्यवस्था तंत्र : शान्तिकुञ्ज

हर क्षेत्र में अपार सफलता और लोकप्रियता प्राप्त कर रहे हैं कन्या/किशोर कौशल शिविर

350 कन्याओं ने प्रशिक्षण लिया, नीम के पेड़ व मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ बाँटीं

जोधपुर। राजस्थान

विश्वकर्मा पब्लिक स्कूल, शास्त्री नगर, जोधपुर में दिनांक 24 से 27 मई की तिथियों में जिला स्तरीय कन्या कौशल शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में जोधपुर शहर और ग्रामीण क्षेत्र से आई लगभग 350 कन्याओं ने भाग लिया।

शिविर सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्रीमती वर्षा ठाकुर एवं श्रीमती सविता भागबोले की टोली पहुँची। उन्होंने कन्याओं को दैनंदिन जीवन में गायत्री उपासना, यज्ञ के समावेश से उसे कैसे शानदार बनाया जाए, इस संदर्भ में विस्तृत मार्गदर्शन किया। सोशल मीडिया और मोबाइल का सकारात्मक उपयोग, व्यसन, फैशन जैसे विषयों की भी चर्चा हुई। कन्याओं को 500 नीम के पेड़, गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ, गायत्री चालीसा व अन्य साहित्य दिया गया।

जिला समन्वयक श्री जे.पी. शर्मा और श्री सोहनलाल पटेल के अनुसार जोधपुर के महिला मण्डल ने इस शिविर की सफलता के लिए अथक प्रयास किए। घर-घर, स्कूल-स्कूल जाकर उन्होंने कन्याओं को शिविर में भाग लेने के लिए प्रेरित किया। सभी के समन्वित पुरुषार्थ की भूरि-भूरि प्रशंसा हुई।

आत्मरक्षा के गुर सिखाये

बूंदी। राजस्थान

गायत्री परिवार ट्रस्ट बूंदी द्वारा दिनांक 11 से 16 जून की तिथियों में पाँच दिवसीय कन्या कौशल शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में नेहा कसेरा ने आत्मरक्षा के गुर सिखाये। श्री विष्णु दत्त दाधीच ने प्रज्ञायोग का प्रशिक्षण दिया। निकिता चतुर्वेदी ने सतत लक्ष्य की ओर बढ़ने का आत्मविश्वास जगाया और डॉ. पारुल सोनी ने स्वास्थ्य रक्षा के सूत्रों से अवगत कराया।

जोधपुर के शिविर में भाग ले रही कन्याएँ

बेटियों को दीपयज्ञ के माध्यम से जन्मदिन मनाने का प्रशिक्षण दिया गया। मेंहदी, निबंध आदि विभिन्न प्रतियोगिताएँ भी हुईं।

बूँदी में प्रशिक्षकों का सम्मान और शिविर में भाग ले रही कन्याएँ

युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज द्वारा ऑनलाइन चलाए जा रहे हैं कन्या-किशोर कौशल प्रशिक्षक प्रशिक्षण सत्र

श्रद्धेया जीजी एवं श्रद्धेय डॉ. साहब के मार्गदर्शन में शान्तिकुञ्ज द्वारा विशेष ऑनलाइन कन्या-किशोर कौशल प्रशिक्षक प्रशिक्षण सत्र चलाये जा रहे हैं। किशोरावस्था व्यक्तित्व विकास का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण एवं संवेदनशील समय है। इस अवस्था में बच्चों को सही मार्गदर्शन प्राप्त हो, वे महानता के पथ पर अग्रसर हों, इसी भाव को केन्द्र में रखकर इन शिविरों का संचालन हो रहा है।

ज्ञात हो कि क्षेत्र में हजारों कार्यकर्त्ता भाई-बहिन बच्चों के व्यक्तित्व विकास के लिए कार्य कर रहे हैं। सभी शान्तिकुञ्ज से प्रशिक्षण प्राप्त करने की इच्छा तो रखते हैं, किन्तु यहाँ पहुँच नहीं पाते। ऐसे परिजनों के लिए यह ऑनलाइन प्रशिक्षण क्रम बहुत उपयोगी सिद्ध हो रहा है।

ऑनलाइन कन्या-किशोर कौशल सत्र प्रत्येक माह 15 से 30 की तारीखों के बीच में चलते हैं। अभी तक गुजरात, मध्य प्रदेश, राजस्थान, बिहार, झारखंड, छत्तीसगढ़, उत्तर प्रदेश, महाराष्ट्र, उड़ीसा, पश्चिम बंगाल, असम, मेघालय, त्रिपुरा, मिजोरम, अरुणाचल, सिक्किम, नागालैंड आदि प्रान्तों के शिविर संपन्न हो चुके हैं। इन सत्रों में भाग ले चुके परिजनों में खूब उत्साह आया है। उनके द्वारा अपने क्षेत्र में कन्या-किशोर कौशल सत्रों के अनेक आयोजन किए जा रहे हैं।

वर्ष 2024 के जुलाई एवं अगस्त माह में पंजाब, हरियाणा, हिमाचल, उत्तराखंड, एनसीआर, दक्षिण भारत एवं नेपाल के शिविर प्रस्तावित हैं। साथ ही जिन किन्हीं परिजनों ने अभी तक इन शिविरों में भाग नहीं लिया है, वह परिजन भी इन सत्रों में भाग ले सकते हैं।

सत्र में भाग लेने हेतु संपर्क सूत्र – 9258360748, 9258296031, 9258360830

युग निर्माणी बेटियों की टोली ने 111 कन्याओं को प्रशिक्षित किया

छिंदवाड़ा। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ छिंदवाड़ा में तहसील स्तरीय चार दिवसीय कन्या कौशल शिविर सम्पन्न हुआ, जिसमें 111 कन्याओं ने भाग लिया। खण्डवा (म.प्र.) से आई पूर्णिमा पवार, तनु पाटीदार, अंकिता पटेल की टोली के क्रांतिकारी उद्बोधन को सुनकर प्रतिभागी कन्याओं के भीतर बैठी झाँसी की रानी, जीजाबाई, गार्गी, मैत्री, मदालसा जाग उठी। सभी ने गुरुदेव के युग निर्माण आन्दोलन को सफल बनाने हेतु घर-घर जाकर नारी शक्ति को जगाने का शुभ संकल्प लिया गया।

समापन समारोह में उपजोन और जिला संगठन के प्रभारी कई वरिष्ठ कार्यकर्त्ता दिनेश देशमुख, अरूण पराड़कर, शिवनारायण साहू, सुधाकर अदलक, पुरुषोत्तम बंदेवार, गोविंद माहोरे आदि उपस्थित रहे। श्री दिनेश देशमुख ने टोली की प्रस्तुति की सराहना की। उन्होंने शिविर में भाग ले रही कन्याओं के विषय में कहा कि कीर्ति, धैर्य, सुख, समृद्धि, शांति, शक्ति, क्षमा एवं प्रसन्नता से परिपूर्ण गौरी, गायत्री स्वरूपा कन्याओं को गायत्री शक्तिपीठ में पाकर हम धन्य हैं। इन्हीं गुणों को विकसित करने के लिए यह शिविर आयोजित किया गया।

चार दिवसीय आवासीय शिविर में व्याख्यान, क्रियात्मक गतिविधियाँ, महापुरुषों के प्रेरक प्रसंग, गीता स्वाध्याय, त्रिकाल ध्यान, योग, यज्ञ आदि का प्रारंभिक प्रशिक्षण दिया गया।

18 जून को प्रातः शक्तिपीठ से लेकर बस स्टैण्ड तक हृदयस्पर्शी नशामुक्ति रैली निकाली गई। बस स्टैण्ड पर लगाई गई नशामुक्ति प्रदर्शनी का सैकड़ों लोगों ने अवलोकन किया।

खेल-खेल में दिया जीवनोपयोगी ज्ञान

पुणे। महाराष्ट्र

गायत्री परिवार कोंढवा-कात्रज के महिला मण्डल ने बच्चों के ग्रीष्मकालीन अवकाश में नारायणी धाम कात्रज में तीन दिवसीय कन्या/किशोर कौशल शिविर का आयोजन किया। बच्चों को शरीर से स्वस्थ, मन से संतुलित तथा भावनात्मक रूप से सक्षम, संस्कारवान बनाने के प्रयास हुए। राजेश टेकरीवाल, ऋषि आचार्य, देवाशीश राउत, उमेश सराड़कर, रमेश कोरड़े, भैयालाल भोइर ने बच्चों को कथा, कहानी, गुरुदेव की प्रेरणाएँ, खेल, प्रतियोगिताओं के माध्यम से जीवनोपयोगी शिक्षाएँ दीं। बच्चों को पर्यावरण के प्रति जागरूक बनाते हुए वृक्षारोपण की प्रेरणा दी गई।

प्रचण्ड गरमी में भी बहिनों में दिखा नारी जागरण अभियान के प्रति जबरदस्त उत्साह

चंद्रपुर, सक्ती। छत्तीसगढ़

गायत्री चेतना केन्द्र चंद्रपुर में 5 से 9 जून की तिथियों में छत्तीसगढ़ का द्वितीय प्रान्तीय नारी सशक्तीकरण प्रशिक्षक प्रशिक्षण शिविर सम्पन्न हुआ। 43 डिग्री की प्रचण्ड गर्मी में भी 200 युवतियों ने इसमें भाग लिया। 40 प्रतिशत बहिनें महाविद्यालयों से आई थीं। छत्तीसगढ़ के प्रायः सभी जिलों से आई यह बहिनें अपने छोटे-छोटे बच्चों को छोड़कर प्रशिक्षण प्राप्त करने आई थीं। उनके इस उत्साह से कार्यक्रम की मुख्य अतिथि राज घराने रायगढ़ व पब्लिक स्कूल चंद्रपुर की संचालिका सुश्री सुजाता एवं सुश्री शशिका पाट्रे प्राध्यापक डिग्री कॉलेज बहुत प्रभावित हुईं। उन्होंने कहा :-

''मैंने अभी तक शिक्षक प्रशिक्षण के अनेक कार्यक्रम देखे हैं, परंतु गायत्री परिवार के मंच से इस तरह का कार्यक्रम हो सकता है, इसकी कल्पना नहीं थी। यज्ञ, हवन, पूजा जैसे कार्यक्रमों से तो मैं परिचित थी, परंतु युग निर्माण के लिए ऐसा प्रशिक्षण और उसके लिए बहिनों का उत्साह देखने के बाद मुझे लग रहा है कि मैंने बहुत कीमती अवसर खो दिया है। ऐसे प्रशिक्षण अवश्य होते रहने चाहिए।''

प्रतिभागी बहिनों ने प्रशिक्षण के बाद अपनी टोलियाँ बनाकर शानदार प्रस्तुतियाँ दीं, जिन्हें देखकर सभी में आत्मगौरव और आत्मविश्वास बढ़ा। आवासीय वातावरण मे परस्पर एक-दूसरे से परिचय हुआ।

समापन अवसर पर मुख्य अतिथियों ने सभी को प्रमाण पत्र एवं प्रतीक चिह्न देकर सम्मानित किया। ट्रस्टी श्री शरद अग्रवाल एवं प्रांतीय युवा प्रकोष्ठ समन्वयक श्री ओम प्रकाश राठौर ने भावी दायित्वों का बोध कराया, जन्म शताब्दी वर्ष तक अपनी सक्रियता को निरंतर बढ़ाते रहने की प्रेरणा दी। प्रांत में अग्रणी भूमिका निभाने वाली बहिनों को स्मृति चिह्न प्रदान कर सम्मानित किया गया।

शिविर का समापन नशा, कुरीति उन्मूलन, नारी जागरण शोभायात्रा के साथ हुआ।

श्रम विभाग, हरियाणा के कार्यालय में गायत्री यज्ञ

श्रम आयुक्त श्री मनीराम शर्मा यज्ञ करते हुए

चण्डीगढ़ :

हरियाणा, पंजाब जोन समन्वयक श्री चंद्रमोहन शर्मा के प्रयासों से श्रम विभाग, हरियाणा के मुख्य कार्यालय सैक्टर-17 चण्डीगढ़ में गायत्री यज्ञ का आयोजन हुआ। माननीय श्री मनीराम शर्मा, आईएएस, लेबर कमिश्नर हरियाणा यज्ञ के मुख्य यजमान थे। उनके साथ अनेक गणमान्यों ने बड़ी श्रद्धा के साथ यज्ञ किया। कार्यक्रम का संचालन श्री चंद्रमोहन शर्मा, श्री एल.सी. कपिल एवं श्री राजकुमार शर्मा की टोली ने किया।

सुपर 50 का चयन और मार्गदर्शन

युवा सम्मेलन

सिंदरी, धनबाद। झारखण्ड

गायत्री ज्ञान मंदिर सिंदरी में 'सुपर 50' युवा शक्ति के निर्माण हेतु एक दिवसीय युवा सम्मेलन का आयोजन हुआ। इसका उद्देश्य जिले के 50 ऐसे युवाओं को तलाशना और तराशना था, जो जन्मशताब्दी वर्ष तक भूले-भटके युवाओं को युग निर्माण की राह पर ले जाने के लिए अपने क्षेत्र में नेतृत्व प्रदान कर सकें।

शिविर के मुख्य वक्ता युवा प्रकोष्ठ, शान्तिकुञ्ज के प्रतिनिधि श्री नीरज महतो एवं प्रांतीय युवा उत्प्रेरक श्री सुरेश कुमार यादव थे। उन्होंने पर्यावरण संवर्धन, व्यसन मुक्त एवं संस्कार युक्त युवा, बाल संस्कारशाला, विचार क्रांति अभियान हेतु झोला पुस्तकालय संचालन जैसे कार्यक्रमों में युवाओं से अपेक्षा संबंधी मार्गदर्शन दिया।

इस कार्यक्रम में धनबाद जिले की सभी शाखाओं के सक्रिय युवाओं की भागीदारी रही। गायत्री जयंती के शुभ अवसर पर 'सुपर 50' के रूप में संगठित सक्रियता अपनाने का संकल्प लिया गया। इस कार्यक्रम में मुख्य प्रबंधक ट्रस्टी श्री रामप्रवेश जी सहित कई वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं ने अपने विचार रखे। कार्यक्रम की अध्यक्षता गायत्री शक्तिपीठ धनबाद के मुख्य प्रबंधक ट्रस्टी श्री विभूति शरण सिंह जी ने की। संचालन बहिन शालिनी यादव एवं सिमरन श्रीवास्तव ने किया।

गायत्री ज्ञान मंदिर की 30 युवाओं की टीमें पिछले दो वर्षों से प्रत्येक शनिवार को वृक्षारोपण का कार्यक्रम चला रही है। उनके द्वारा वन विभाग द्वारा लगाये गये वृक्षों का संरक्षण, सिंचन भी किया जा रहा है।

सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन का महत्त्व बताया

व्यक्तित्व परिष्कार शिविर

गैंसडी, बलरामपुर। उत्तर प्रदेश

गायत्री परिवार शाखा गैंसडी द्वारा बीजी पैलेस में चार दिवसीय व्यक्तित्व परिष्कार शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर युवाओं को सामाजिक और आध्यात्मिक जीवन की गरिमा का बोध कराने वाला था। श्री अनुरोध पांडे ने उन्हें अध्यात्म से उत्कृष्टता की ओर अग्रसर होने और सामाजिक संस्थाओं से जुड़कर समाज के विकास में योगदान देने की अपील की।

श्री अजय सैनी ने जीवन की सफलताओं में स्वाध्याय के योगदान की चर्चा की। श्री गुलाब चंद भारती ने परम पूज्य गुरुदेव के कर्तृत्व एवं व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला।

बौद्धिक प्रतियोगिता के विजेताओं का सम्मान

कार्यक्रम में क्विज प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें 19 टीमों ने भाग लिया। आशीष रावत, खुशी जायसवाल और आलोक यादव की टीम ने क्रमशः प्रथम तीन स्थान प्राप्त किये।

अब आप 01334-311001 पर फोन कर शान्तिकुञ्ज की नई स्वचालित फोन व्यवस्था (आईवीआर) से शान्तिकुञ्ज के विभिन्न विभागों से सीधा सम्पर्क कर सकते हैं।

गायत्री जयंती-गंगा दशहरा पर्व पर नवचेतना का स्पंदन कराते कुछ विशिष्ट आयोजन

भरतपुर-अलवर संभाग के हर प्रज्ञा केन्द्र में भव्य कार्यक्रम का आयोजन

अलवर। राजस्थान

भरतपुर-अलवर संभाग के प्रायः सभी शक्तिपीठों, प्रज्ञा केन्द्रों में गायत्री जयंती पर्व बड़ी श्रद्धा और उल्लास के साथ मनाया गया। बहरोड़, दौसौद, बानसुर, खैरथल, किशनगढ़ बास, तिजारा, टपूकडा, भिवाडी, राजगढ, कठूमर, कुम्हेर, डीग, कामां, बाडाभडकौल, बींजला, नदबई आदि प्रमुख शाखाओं में पाँच से लेकर नौ कुण्डीय यज्ञों के आयोजन हुए। अनेक शाखाओं ने एक से तीन कुण्डीय तक के यज्ञायोजन किए।

क्षेत्रीय संवाददाता श्री सतीश सारस्वत ने बताया कि सभी कार्यक्रमों से हजारों लोग लाभान्वित हुए। उन्हें जनजीवन में पवित्रता, प्रखरता का संचार करने वाली दिव्य धाराओं- गंगा और गायत्री के प्रति आस्था बढ़ाते रहने की प्रेरणा दी गई। परम पूज्य गुरुदेव के महाप्रयाण दिवस के उपलक्ष्य में उनके तपस्वी व्यक्तित्व का परिचय देते हुए बताया गया कि वे व्यक्ति नहीं, एक विचार थे। उनके विचारों में जीवन के उत्थान और राष्ट्र के नवनिर्माण के सूत्र समाहित हैं।

नगर और कुम्हेर में आयोजित कार्यक्रमों में झलकती परिजनों की आस्था

108 कुण्डीय यज्ञ का संकल्प

डीग जिले के गाँव बावेन (कुम्हेर) में वरिष्ठ युग निर्माणी पं. श्याम सुंदर शर्मा ने ग्रामीणों को गुरु, गायत्री एवं गंगा का महत्त्व समझाया। श्रद्धालुओं ने इस वर्ष अपने गाँव में 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के आयोजन का संकल्प लिया।

दो दिवसीय पर्वोत्सव मनाया

गायत्री शक्तिपीठ अलवर में दो दिवसीय समारोह अखंड जप, सायंकाल दीप यज्ञ और 9 कुण्डीय यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। श्री मुरारी लाल शर्मा एवं श्री सतीश बडाया जी के सानिध्य में यज्ञ संचालन के साथ-साथ गुरुदीक्षा, विवाह दिवस, जन्मदिन, अन्नप्राशन संस्कार भी सम्पन्न कराये गये।

वार्षिकोत्सव मनाया : एक मास तक क्षेत्र का सघन मंथन किया

नदबई शक्तिपीठ ने चार दिवसीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रज्ञा पुराण कथा के माध्यम से शक्तिपीठ का वार्षिकोत्सव मनाया, जिसकी पूर्णाहुति गायत्री जयंती के दिन हुई। इस कार्यक्रम के लगभग एक माह पूर्व से ही पूरे क्षेत्र में घर-घर यज्ञ-दीपयज्ञ की शृंखला चलाई जा रही थी।

प्रज्ञापीठ का वार्षिकोत्सव

नए सभा कक्ष का लोकार्पण

सिधमुख, चूरू। राजस्थान

गायत्री जयंती-गंगा दशहरा पर्व, परम पूज्य गुरुदेव का महाप्रयाण दिवस एवं गायत्री प्रज्ञापीठ सिधमुख के स्थापना दिवस के उपलक्ष्य में तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित किया गया। इसी समारोह में भामाशाह श्री मनीष गुप्ता द्वारा नवनिर्मित हॉल का उदघाटन भी किया गया। प्रज्ञापीठ के कार्यवाहक श्री बालदान चारण द्वारा समयदान और विशेष अंशदान कर सहयोग करने वाले कार्यकर्त्ताओं का सम्मान किया गया।

तीन दिवसीय कार्यक्रम का शुभारंभ 14 जून को 500 कलशों की भव्य शोभा यात्रा के साथ हुआ। सायंकाल श्री गोपाल स्वामी की टोली ने श्रीमद पावन प्रज्ञा पुराण कथा के साथ हजारों लोगों को जीवन के उत्कर्ष की मार्मिक प्रेरणाएँ दीं।

श्री मनीष गुप्ता जी के प्रतिनिधि श्री राजकुमार गुप्ता, संदीप गोयल और दीपक शर्मा ने दीप प्रज्वलन कर हॉल का उद्घाटन किया।

द्वितीय दिवस दीप महायज्ञ में भाग लेने वाले सैंकड़ों यजमानों को गायत्री मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ और चालीसा भेंट की गईं।

गायत्री जयंती और गंगा दशहरा पर्व का आयोजन 24 कुंडीय यज्ञ के साथ सम्पन्न हुआ। इसमें सिधमुख और आसपास के लोगों ने बड़ी संख्या में भाग लिया।

पुनः बसावट क्षेत्र के 24 गाँवों के आदर्श विकास की योजनाएँ बनीं

बड़वानी। मध्य प्रदेश

गायत्री जयंती के पावन दिन माँ नर्मदा के तट पर एक अत्यंत मनमोहक कार्यक्रम सम्पन्न हुआ। गायत्री परिवार के बड़वानी तथा धार जिले के कार्यकर्त्ताओं ने इसमें भाग लिया। कार्यक्रम में अनेक वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारी भी शामिल थे। सबने मिलकर वहाँ पुनः बसावट वाले क्षेत्र के 24 गाँवों का चयन कर उनमें गायत्री परिवार के कार्यक्रमों के क्रियान्वयन की योजना बनाई है।

माँ नर्मदा के राजघाट तट पर सायंकाल 24 अग्निहोत्र यज्ञ एवं 108 दीप दान के साथ विभिन्न योजनाओं के संकल्प हुए। हजारों व्यक्तियों की उपस्थिति में श्री मेवालाल पाटीदार के प्रेरक आचार्यत्व में यजमानों ने ठीक सूर्यास्त की वेला में 24 अग्निहोत्र यज्ञ में विशिष्ट आहुतियाँ प्रदान कीं। बहिन पूजा ने नर्मदाष्टक का पाठ किया।

नर्मदा तट पर आयोजित कार्यक्रम की दिव्य छटा

जन्म शताब्दी वर्ष तक की तीन वर्षीय कार्ययोजना

- चयनित 24 गाँवों में के घर-आँगन में वृक्षारोपण। कार्यक्रम में नीम, पीपल, आम, बड़, करंज, सेमल के 108 पौधों का तरुपूजन कर ग्रामवासियों में वितरित किए गए।
- परिक्रमा मार्ग में सघन वृक्षारोपण-संरक्षण।
- तट, घाट, मंदिर और गाँव में सतत स्वच्छता का अभियान।
- व्यसनमुक्ति के लिए सशक्त अभियान।
- साधना, शिक्षा, स्वास्थ्य संवर्धन कार्यक्रम।

खण्डवा के जिला समन्वयक महेंद्र भावसार ने गायत्री परिवार द्वारा संकल्पित मातृशक्ति अखण्ड दीप जन्मशताब्दी तक के लिए आगामी तीन वर्षों की योजनाओं की जानकारी दी। उन्होंने बताया कि यह सभी कार्यक्रम प्रशासन एवं विभिन्न सामाजिक संस्थाओं के सहयोग से क्रियान्वित किए जाएँगे।

कार्यक्रम में उपस्थित नगर पालिका के मुख्य अधिकारी ने गायत्री परिवार द्वारा संचालित लोकमंगल की योजनाओं की प्रशंसा की। गायत्री परिवार ने रोहिणी तीर्थ सेवा समिति के सदस्यों का मंत्र चादर ओढ़ा कर सम्मान किया।

कार्यक्रम में बडवानी विधायक राजन मंडलोई, सांसद प्रतिनिधि, राजस्व अधिकारी बड़वानी, मुख्य चिकित्सा अधिकारी, जन संपर्क विभाग, केरियर काउंसलिंग विवेकानंद प्रकोष्ठ, इको क्लब, अजीत जैन मित्र मंडल, गुरुद्वारा प्रबंधन समिति, घाट निर्माण समिति, रोटरी क्लब, लायंस क्लब आदि सामाजिक संगठन के कार्यकर्त्ता तथा दोनों जिलों की गायत्री परिवार शाखाओं के सैकड़ों भाई-बहिन उपस्थित थे।

शिकागो में आयोजित हुआ विशाल समारोह

700 श्रद्धालुओं ने भाग लिया

शिकागो। अमेरिका

गायत्री ज्ञान मन्दिर शिकागो में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ गायत्री जयंती महोत्सव मनाया गया। इस कार्यक्रम में अपार जनउत्साह दिखाई दिया। लगभग 700 श्रद्धालुओं ने भाग लेकर माँ भगवती गायत्री के साथ परम पूज्य गुरुदेव, परम वंदनीया माता जी की भावभरी पूजा-अर्चना की।

पर्व संदेश में पावन गुरुसत्ता के जुड़े अनेक मार्मिक प्रसंगों की चर्चा हुई। सभी ने उस दिव्य चेतना की अनुभूतियों के साथ भावभरी श्रद्धाञ्जलि अर्पित की।

वेदमूर्ति के सच्चे वेददूत बनें, गायत्री को घर-घर प्रतिष्ठित करें

बेंगलुरु। कर्नाटक

गायत्री चेतना केंद्र बेंगलुरु में आयोजित गायत्री जयंती समारोह का शुभारंभ 15 जून को प्रातः 24 घंटे के सामूहिक अखंड गायत्री मंत्र जप से हुआ। गायत्री जयंती-गंगा दशहरा के दिन पर्व पूजन एवं पाँच कुण्डीय यज्ञ के साथ इसकी पूर्णाहुति हुई। कार्यक्रम में भाग ले रहे श्रद्धालुओं को परम पूज्य गुरुदेव के जीवन का अनुसरण करने की प्रेरणा दी गई, जिन्होंने कठोर तप कर गायत्री को जीवन में धारण किया और गायत्री जयंती के दिन उसी परम चेतना में विलीन हो गये।

यज्ञ संचालन श्रीमती रीता रजक, सायू बड़गोती, शिवांगी मिश्रा व श्रीमती श्वेता श्रीवास्तव ने किया। वैज्ञानिक श्री अमिताभ सराफ ने त्रिपदा गायत्री का तत्त्वदर्शन समझाया। उन्होंने वेदमूर्ति के सच्चे वेददूत बनकर युगशक्ति गायत्री को घर-घर प्रतिष्ठित करने की प्रेरणा दी। आचार्य श्री कमलेश खरे और अश्विनी कटरे ने कई संस्कार सम्पन्न कराए।

बैंगलुरु में आयोजित गायत्री जयंती पर्व समारोह में युवाओं की युग निर्माणी आस्थाओं का पोषण

पेड़ लगाओ, धरती की तपन मिटाओ

खरगोन। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ खरगोन में गायत्री जयंती और गंगा दशहरा का पावन पर्व पंच कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ मनाया गया। यज्ञाचार्य श्रीमती सुनीता पाटीदार, कविता कुशवाह व प्रभा पाटीदार ने इस अवसर पर श्रद्धालुओं से धरती की तपन को शान्त करने के लिए प्राकृतिक ए.सी., अर्थात वृक्ष लगाने का संकल्प करवाये।

सांयकाल दीप यज्ञ में मुख्य प्रबंध ट्रस्टी श्री लक्ष्मण पटेल ने पर्व संदेश दिया। उन्होंने कहा कि गंगा दशहरा, गायत्री जयंती हमें संदेश देती है कि ऋषि भगीरथ, वशिष्ठ, विश्वामित्र और परम पूज्य पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी जैसे तपस्वी व्यक्तित्वों के अनुसरण में ही जीवन की समस्त समस्याओं का समाधान निहित है।

गायत्री शक्तिपीठ खरगोन में मनी गायत्री जयंती

इस कार्यक्रम में जिला समन्वयक श्री जोगीलाल मुजाल्दे, श्री योगेश पाटीदार, डॉ. संतोष पाटीदार, श्री बी.एस.मंडलोई, हीरालाल सोनी, श्याम सोनी, आनंद बघेल, श्रीमती कल्पना पेडणेकर, श्रीमती कृष्णा सोनी आदि सैकड़ों परिजनों ने भाग लिया।

रक्तदान महायज्ञ ने जगाई सामाजिक संवेदना

जैसलमेर। राजस्थान : गायत्री परिवार की युवा इकाई वीर आलाजी दिया मंडल, कनोई ग्राम ने गायत्री जयंती पर रक्तदान महायज्ञ का आयोजन किया, जिसमें 42 युवाओं ने स्वैच्छिक रक्तदान कर लोकमंगल के लिए आहुतियाँ समर्पित कीं। आई.आई.टी. जोधपुर में प्रोफेसर और दिया समन्वयक डॉ. विवेक विजय ने बताया कि यह शिविर युवाओं में सामाजिक संवेदना जागरण का एक सफल प्रयास था। सभी रक्तदाताओं का मंगल तिलक कर, उन्हें सद्वाक्य के बोर्ड भेंट कर और पुष्पवर्षा कर सम्मानित किया गया। राजकीय जिला चिकित्सालय के रक्त कोष प्रभारी श्री कैलाश छंगाणी ने 'दिया' टीम का आभार व्यक्त किया।

नगर में अनेक स्थानों पर आयोजित हुए गायत्री जयंती समारोह

जमशेदपुर। झारखण्ड

जमशेदपुर में गायत्री मंदिर मून सिटी, मानगो, चरण पीठ गोविंदपुर, साहित्य विस्तार केंद्र, प्रज्ञा पीठ, गायत्री चेतना केंद्र, बेको इत्यादि स्थानों पर गायत्री जयंती-गंगा दशहरा का पावन पर्व मनाया गया। गायत्री मंदिर बारीडीह बस्ती में माँ गायत्री की नवीन प्रतिमा की प्राण प्रतिष्ठा की गई। गायत्री ज्ञान मंदिर भालूबासा में विराट दीप यज्ञ के समय सैकड़ों युवाओं ने गुरुसत्ता को संकल्प श्रद्धाञ्जलि समर्पित की।

जीवन का एक क्षण सोने की करोड़ों मुद्राएँ देने पर भी नहीं मिल सकता, यदि उसे नष्ट किया जाए तो इससे अधिक हानि क्या हो सकती है? - चाणक्य

मानवता के उत्थान के लिए समर्पित सेवा-सद्भाव

विश्व रक्तदाता दिवस पर मिला सम्मान

जमशेदपुर। झारखण्ड

विश्व रक्तदाता दिवस के अवसर पर झारखंड सरकार के तरफ से आईपीएच ऑडिटोरियम नामकुम, राँची में एक पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। इसमें गायत्री परिवार टाटानगर के युवा प्रकोष्ठ नवयुगदल को धार्मिक संस्थाओं में झारखंड प्रान्त में सर्वाधिक रक्तदान कराने हेतु स्मृति चिन्ह और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। नवयुगदल की ओर से रक्तदान शिविर के संयोजक श्री संजीव सिन्हा, श्री प्रशान्त कालिंदी, श्री कुंवर प्रसाद मालाकार, श्री संतोष श्रीवास्तव

नवयुग दल के कार्यकर्त्ता प्रमाण पत्र और सम्मान ग्रहण करते हुए

और श्री अमर राजा यह सम्मान ग्रहण करने राँची पहुँचे थे।

मानव श्रृंखला ने दिया व्यसनमुक्त भारत का संदेश

उज्जैन। मध्य प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ उज्जैन ने दिनांक 22 जून 2024 को मध्य प्रदेश शासन के सामाजिक कल्याण एवं दिव्यांग जन सशक्तीकरण विभाग के साथ मिलकर एक जनजागरण यात्रा निकाल कर नगरवासियों को 'नशा मुक्त भारत' के निर्माण का संदेश दिया। यह यात्रा प्रातःकाल लक्ष्मी नगर चौराहा से आरंभ होकर घंटाघर चौराहे पर पहुँची। श्री देवेन्द्र कुमार श्रीवास्तव ने बताया कि समापन अवसर पर मानव श्रृंखला बनाकर लोगों का ध्यान आकर्षित किया

उज्जैन में मानव श्रृंखलाओं में शामिल हुए सैकड़ों कार्यकर्त्ता भाई-बहिन

गया, उन्हें नशा छोड़ने का संकल्प लेने की प्रेरणा दी गई, उपाय भी बताए गए।

प्रकृति के संग योग
पौधे लगाने से भी जरूरी है पौधों को बचाना

लखीमपुर खीरी। उत्तर प्रदेश

युवा प्रकोष्ठ लखीमपुर ने विश्व योग दिवस से 'प्रकृति संग योग' की थीम पर इस मानसून के वृक्षारोपण अभियान की शुरुआत की। मोहल्ला गंगोत्री नगर में तरुपूजन संस्कार के साथ इसका शुभारंभ हुआ। नगर पालिका अध्यक्ष डॉ. इरा श्रीवास्तव ने कचनार के पौधे का पूजन और रोपण किया।

वृक्षगंगा अभियान के संयोजक श्री अनुराग मौर्य ने बताया कि पौधे लगाने से अधिक जरूरी है पौधों को बचाना। उनकी टीम द्वारा पौधे वहीं रोपे जा रहे हैं, जहाँ लोग उनकी देखभाल करने की जिम्मेदारी ले रहे हैं।

बरगद के पेड़ की शाखाओं का पुनःरोपण
कटी डालियों को पूरे शहर में रोपा गया

मोडासा, अरवल्ली। गुजरात

गायत्री परिवार युवा समूह मोडासा अपने नगर और आसपास के गाँवों में वृक्षारोपण का सशक्त अभियान चला रहा है। इसी बीच एक दिन उन्हें सूचना मिली कि नगर में साईं मंदिर के पास एक बरगद की शाखाएँ काटी जा रही हैं। शाखा परिजन वहाँ पहुँचे, उन्होंने कटी शाखाएँ एकत्र कीं और उन्हें शहर के कई हिस्सों में जाकर लगा दिया। हरीतिमा संवर्धन के प्रति गायत्री परिवार की यह प्रतिबद्धता लोगों में वृक्षारोपण के प्रति आस्था और उत्साह जगाने वाली सिद्ध हुई।

निःशुल्क नेत्र चिकित्सा शिविर

सरायकेला। झारखण्ड

दिनांक 13 जून को एमआईजी स्थित गायत्री मंदिर में नेत्रम नेत्रालय के सहयोग से नेत्र जाँच एवं मोतियाबिंद के ऑपरेशन के लिए निःशुल्क शिविर का आयोजन किया गया। इसमें गरीब परिवारों एवं 18 वर्ष से कम उम्र वाले बच्चों को निःशुल्क चश्मा दिया गया। लगभग 70 लोगों ने नेत्र परीक्षण कराया और 12 लोगों को मोतियाबिंद के निःशुल्क ऑपरेशन के लिए चुना गया। आदित्यपुर स्थित शेरे पंजाब चौक त्रिनेत्रम में इनका ऑपरेशन किया जाना है। गायत्री परिवार की ओर से इस शिविर को सफल बनाने में ट्रस्टी श्रीमती बसंती देवी, संध्या शर्मा, सरला देवी, संगीता देवी, उषा अग्रवाल, दुर्गा देवी, चंदा देवी, मनिता देवी, शिवम कुमार, ट्रस्टी दिनेश सिंह एवं जिला उप समन्वयक श्याम नारायण शर्मा का सहयोग रहा।

निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा सेवाएँ

बूंदी। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ बूंदी ने डॉ. दीपाली माहेश्वरी के सहयोग से लोगों के लिए

निःशुल्क आयुर्वेदिक चिकित्सा सेवाएँ आरंभ कर दी हैं। वे प्रत्येक गुरुवार को प्रातः 9 से 11 बजे तक चिकित्सा परामर्श के लिए सेवाएँ प्रदान करेंगी। 20 जून को सेवाओं का शुभारंभ करते हुए उन्होंने कहा कि आयुर्वेद दुनिया की सबसे पुरानी समग्र चिकित्सा प्रणालियों में से एक है, जो शरीर ही नहीं, मन, आत्मा और प्रकृति-पर्यावरण के बीच संतुलन स्थापित करती है।

सवा लाख कन्याओं को गढ़ने का विराट अभियान

खण्डवा। मध्य प्रदेश

''इक्कीसवीं सदी नारी सदी होगी।'' परम पूज्य गुरुदेव के इसी वाक्य को केन्द्र में रखकर खण्डवा शाखा पिछले लगभग 14 वर्षों से नारी उत्कर्ष के विराट अभियान पर उल्लेखनीय कार्य कर रही है। शाखा ने अपने क्षेत्र में युग निर्माण आन्दोलन के आदर्श तथा कौशल में रची कन्याओं/युवतियों की ऐसी वाहिनी तैयार कर ली है, जो अपने जिले ही नहीं, कई प्रान्तों तक पहुँचकर कन्याओं को प्रेरित और प्रशिक्षित कर रही हैं। हर घर की बेटी दुर्गा है, लक्ष्मी है, सरस्वती है, यह भाव जगा रही हैं।

इस अभियान के सूत्रधार श्री बृजेश पटेल के अनुसार परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी सन् 2026 तक सवा लाख आदर्श कन्याओं को गुरुसत्ता के श्रीचरणों में समर्पित करने की योजना पर वे काम कर रहे हैं। इस क्रम में 28 नवम्बर से 2 दिसम्बर तक गायत्री धाम सिरसौद में विराट कन्या कौशल शिविर का आयोजन हो रहा है। यह मात्र पाँच दिवसीय आयोजन नहीं, अपितु चैत्र नवरात्र (17 अप्रैल 2024) से आरंभ हो चुका एक विराट अनुष्ठान है, जिसके माध्यम से 24,000 कन्याओं को मिशन के आदर्शों के अनुरूप गढ़ा जा रहा है। इस प्रक्रिया के अंतर्गत अगले वर्ष तक 51,000

युगतीर्थ-शान्तिकुञ्ज के दर्शन करेंगे कन्याओं के समूह

नवम्बर-दिसम्बर 2024 के बाद विराट कन्या कौशल शिविर के उपरांत कन्याओं को समूहों में शान्तिकुञ्ज, मथुरा, आँवलखेड़ा दर्शन के लिए लाने की योजना बनाई गई है।

सवा लाख कन्याओं द्वारा हो रहा है गायत्री महामंत्र लेखन
गाँव-गाँव बाँटी जा रही हैं मंत्रलेखन पुस्तिकाएँ

और जन्मशताब्दी वर्ष तक देश की 1,25,000 शिक्षित, स्वावलम्बी, राष्ट्र के नवोन्मेष के लिए समर्पित कन्याओं को राष्ट्र को समर्पित किया जाएगा।

श्री बृजेश पटेल ने बताया कि यह मात्र मंचीय कार्यक्रम नहीं है, बल्कि सघन जनसंपर्क के आधार पर कन्याओं को प्रेरित, प्रशिक्षित एवं सक्रिय करके आदर्शोन्मुख करने की जमीन से जुड़ी योजना है। गत वर्ष भी खण्डवा में 11000 कन्याओं का कन्या कौशल शिविर हो चुका है। उसके बाद सतत जनसंपर्क कर लाखों की संख्या में देव स्थापनाएँ व साहित्य स्थापनाएँ की गईं, शालाओं में व्यक्तित्व निर्माण के सूत्र दिए गए, जन्मदिन पर वृक्ष लगाए गए, झोपड़ियों में पहुँचकर कन्याओं को पीले वस्त्र देकर उन्हें मंच पर बिठाया गया, उनके मन की बातों को बाहर लाने का प्रयास किया गया।

10 चरणों वाली योजना

1. सवा लाख मंत्र लेखन : चैत्र नवरात्र से आश्विन नवरात्र तक सवा लाख कन्याओं से गायत्री महामंत्र लेखन कराना। गाँव-गाँव कन्याओं से संपर्क कर मंत्र लेखन पुस्तिकाएँ वितरित की जा रही हैं।
2. मंत्रलेखन करने वाली सभी कन्याओं का पूजन।
3. जन्म शताब्दी की स्मृति में प्रत्येक ग्राम में त्रिवेणी रोपण।
4. कन्याओं को कर्मकाण्ड एवं स्वावलम्बन प्रशिक्षण।
5. नवम्बर में कन्या कौशल शिविर में भाग लेने वाली 24,000 कन्याओं का चयन और पीत वस्त्र वितरण।
6. कन्याओं द्वारा दीपयज्ञ के आयोजन।
7. प्रशिक्षित कन्याओं द्वारा गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ, परिवारों को नशामुक्ति का संकल्प कराना।
8. स्थानीय शक्तिपीठों में सामूहिक प्रार्थना के कार्यक्रम।
9. कन्याओं द्वारा विराट संस्कार यात्राओं के आयोजन।
10. विराट कन्या कौशल शिविर के उपरांत कन्याओं को समूहों में शान्तिकुञ्ज, मथुरा, आँवलखेड़ा दर्शन के लिए लाना।

सिरसौद कन्या गुरुकुल की स्थापना बनेगा कन्याओं के प्रशिक्षण की छावनी

सिरसौद की जिस संस्कारित भूमि पर कन्या कौशल शिविर आयोजित हो रहा है, वहाँ कन्या गुरुकुल की स्थापना होगी। सन् 2010 में वहाँ श्रीराम स्मृति उपवन की स्थापना कर 2400 पौधे लगाए गए थे, जो आज वृक्ष बन चुके हैं। वहाँ की 9 एकड़ भूमि में 124 गौ माता की गौशाला स्थापित है। अब इसी पवित्र संस्कारित भूमि को कन्याओं को प्रशिक्षण देने की छावनी बनाया जा रहा है।

युग निर्माणी सूत्र-सिद्धांतों के लिए समर्पित महाविद्यालय

गायत्री यज्ञ से हुआ नए भवन का लोकार्पण

कठूमर, अलवर। राजस्थान

कठूमर में गैलेक्सी शिक्षण संस्था द्वारा महाविद्यालय के लिए नव निर्मित भवन का शुभारंभ दिनांक 9 जून 2024 को गायत्री यज्ञ से किया गया। इस यज्ञ में संस्था प्रधान श्री मनोज चौधरी, निदेशक श्री रमेश चौधरी सहित संस्था परिवार के अनेक भाई बहिन सम्मिलित हुए। भरतपुर-अलवर क्षेत्र के वरिष्ठ कथावाचक पं. श्याम सुंदर शर्मा की टोली ने यह कार्यक्रम सम्पन्न कराया।

यज्ञ करते श्री रमेश चौधरी एवं साथी

सतत चलते हैं गायत्री परिवार के नैतिक शिक्षा कार्यक्रम, विद्यार्थियों पर देखा गया है प्रभाव, बोर्ड की परीक्षाओं में मैरिट में आते हैं बच्चे

ज्ञातव्य है कि गैलेक्सी शिक्षण संस्था कठूमर एक ही परिसर में प्राथमिक विद्यालय से लेकर महाविद्यालय तक का संचालन करती है। यह संस्था हर स्तर के विद्यार्थियों को संस्कारवान बनाने के लिए समय-समय पर नैतिक शिक्षा गोष्ठी, 9 अथवा 24 कुण्डीय गायत्री यज्ञ, सामूहिक जन्म दिन समारोह, सद्साहित्य वितरण जैसे कार्यक्रम कराती रहती है। संस्था के निदेशक श्री रमेश चौधरी स्वयं वरिष्ठ गायत्री साधक हैं। इन कार्यक्रमों के आयोजनों में उनका विशिष्ट योगदान रहता है।

श्री रमेश चौधरी ने बताया कि गायत्री परिवार की गतिविधियों का विद्यार्थियों की मनोभूमि पर गहरा प्रभाव पड़ता है। पिछले कई वर्षों से गैलेक्सी शिक्षण संस्था के विद्यार्थी राजस्थान सेकेंडरी एजूकेशन बोर्ड द्वारा आयोजित सैकंडरी और सीनियर सेकेंडरी परीक्षाओं में मेरिट में आते रहे हैं।

दिवंगत देवात्माओं को भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री सुखराम भारद्वाज, बिलासपुर। हिमाचल प्रदेश

गायत्री शक्तिपीठ बिलासपुर के संस्थापक श्री सुखराम भारद्वाज 77 वर्ष की आयु में दिनांक 5 मई 2024 को गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए। सन् 1974 में परम पूज्य गुरुदेव से दीक्षा लेने के बाद से उन्होंने मिशन का भरपूर कार्य किया, शान्तिकुञ्ज में समयदान भी किया। बिलासपुर जिले में मिशन के विस्तार में उनका बहुत बड़ा योगदान रहा।

श्री रामानंद सिंह, घाटोटांड, रामगढ़। झारखण्ड

गायत्री प्रज्ञापीठ घाटोटांड के संस्थापक सदस्य श्री रामानंद सिंह का दिनांक 18 जून 2024 को 96 वर्ष की अवस्था में देहावसान हो गया। कलेर, जिला औरंगाबाद के मूल निवासी स्व. श्री रामानंद जी सन् 1990 में मिशन से जुड़े और सेवा निवृत्ति के बाद अपना पूरा समय मिशन के लिए समर्पित कर दिया था।

श्री किशोर प्रसाद साह, खगड़िया। बिहार

गायत्री परिवार मानसी के प्रखंड युवा संयोजक श्री संतोष कुमार एवं उनके परिवारी जनों ने अपने पूज्य पिता स्व. किशोर प्रसाद साह की प्रथम पुण्यतिथि पर दीपयज्ञ के साथ श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया। उल्लेखनीय है कि स्व. श्री किशोर प्रसाद जी की मिशननिष्ठा और संस्कारों का ही प्रभाव है कि पुत्र अंगद कुमार, समधी श्री चंद्रशेखर साह, बहनोई गरीब साह सहित पूरा परिवार मिशन के लिए पूरी तरह से समर्पित है।

श्रीमती सुधा श्रीवास्तव, सिझौली, अम्बेडकर नगर। उ. प्र.

समाज और संस्कृति के उत्थान के लिए जीवन समर्पित कर देने वाली गायत्री साधिका स्व. श्रीमती सुधा श्रीवास्तव को उनकी प्रथम पुण्य तिथि पर गायत्री यज्ञ के साथ भावभरी श्रद्धांजलि अर्पित की। श्री बनवारीलाल श्रीवास्तव जी ने बताया कि उन्होंने अपनी साधना और गुरुकार्य के लिए समर्पण के बल पर पूरे परिवार को नशामुक्त कर दिया था। उनका पूरा मोहल्ला उन्हीं के मार्गदर्शन में तीज-त्यौहार मनाया करता था।

जिन्दगी की कीमत जीने में है, दिन बिताने में नहीं।

देश-विदेश में युगशक्ति गायत्री की दिव्य चेतना का व्यापक विस्तार करते विशिष्ट आयोजन

यूरोप में हुआ युग चेतना का विस्तार

ब्रैडा शहर में हुए यज्ञ में 25 परिवारों ने भाग लिया

ब्रैडा। नीदरलैण्ड

नीदरलैण्ड के सक्रिय कार्यकर्त्ता श्री राहुल त्रिपाठी के विशेष प्रयासों से ब्रैडा शहर में रह रहे उनके भाई श्री पुष्पेन्द्र त्रिपाठी के घर पहली बार गायत्री महायज्ञ का विशाल सामूहिक आयोजन सम्पन्न हुआ। श्री राहुल जी ने बताया कि इस कार्यक्रम में 25 परिवारों ने भाग लिया। सभी परम पूज्य गुरुदेव के महान व्यक्तित्व और विश्व के नवनिर्माण के लिए उनकी योजनाओं का परिचय पाकर भावविभोर हो गए।

श्री राहुल जी ने बताया कि यह यज्ञ यूरोप में मिशन के विस्तार की दृष्टि से एक उल्लेखनीय उपलब्धि थी। अब वे बेल्जियम सहित यूरोप के अन्य क्षेत्रों में मिशन के विविध कार्यक्रम सम्पन्न कराएँगे।

संस्कार परम्परा का पुनर्जीवन

24 कुण्डीय यज्ञ के साथ मनाई विवाह की 50वीं वर्षगाँठ

मुरादाबाद। उत्तर प्रदेश

श्रीमती संतोष एवं श्री देवदत्त नारंग

गायत्री परिवार ट्रस्ट मुरादाबाद ने 29 मई को के.वी. रिसॉट मुरादाबाद में 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन किया। गुरुकार्यों के लिए तन, मन, धन से समर्पित श्रीमती संतोष नारंग एवं गायत्री परिवार ट्रस्ट मुरादाबाद के ट्रस्टी श्री देवदत्त नारंग ने इस महायज्ञ में अपने विवाह की 50वीं वर्षगाँठ मनाते हुए इस कार्यक्रम को विशेष प्रेरणादायी बना दिया। उन्होंने यज्ञ में भाग ले रहे लगभग 450 भाई-बहिनों को अपने जीवन में बरसी गुरुकृपा के संस्मरण सुनाते हुए अपने समय, साधन और प्रतिभा का एक अंश ईश्वरीय प्रयोजन के लिए लगाने की प्रेरणा दी।

महायज्ञ को सम्पन्न कराने शान्तिकुञ्ज से श्री जयराम मोटलानी की टोली पहुँची थी। गायत्री चेतना केन्द्र से जुड़े प्रमुख प्राणवान कार्यकर्त्ता सर्वश्री एसएन मिश्रा, एलके त्यागी, हरीश वर्मा, डॉ. लवलेश, मधु कपूर, मीनू, शशि टंडन, शीला त्यागी आदि ने विशिष्ट योगदान दिया।

रूस के सूर्य फेस्टिवल में गायत्री यज्ञ

विगत नौ वर्षों से रूस में युगशक्ति गायत्री का प्रचार कर रही हैं गायत्री साधिका गार्गी (गालीना)

जुलाई में ही आयोजित होगा 11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ

क्रीम। रूस

रूस के नगर क्रास्नोदार में रहने वाली गायत्री साधिका गार्गी, जिन्हें सन् 2015 में श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने शान्तिकुञ्ज में दीक्षा दिलाते हुए यह नाम दिया था, पिछले 9 वर्षों से युगशक्ति गायत्री को जन-जन के मन में प्रतिष्ठित करने का अद्वितीय कार्य कर रही हैं। वे प्रत्येक रविवार को अपने पड़ोसी रूसी परिजनों को साथ लेकर यज्ञ करती हैं। उन्होंने सैकड़ों लोगों को गायत्री उपासना-साधना से जोड़ा है।

हाल ही में क्रीमीया में सूर्य फेस्टिवल आयोजित हुआ। साध्वी गार्गी को इसमें विशेष रूप से आमंत्रित किया गया। उन्होंने उपस्थित सैकड़ों रूसी परिजनों के साथ यज्ञ किया और

गायत्री यज्ञ में भाग ले रहे रूसी श्रद्धालु

गायत्री मंत्र एवं गायत्री यज्ञ की महत्ता बताई।

जुलाई के अंतिम सप्ताह में साध्वी गार्गी 11 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ का आयोजन कर रही हैं। इन दिनों वे उसके प्रचार-प्रसार में जुटी हैं। इसी वर्ष अपने रशियन मित्रों को शान्तिकुञ्ज लाकर प्रशिक्षण दिलाने की भी योजना है।

वनवासी क्षेत्र में मिली अपार सफलता

नौ कुण्डीय यज्ञ में शामिल हुए 11 गाँवों के लोग

कोडरमा के महायज्ञ में दीपयज्ञ के अवसर पर झलकता उल्लास

कोडरमा। झारखंड

168 दीक्षा संस्कार हुए

डोमचांच प्रखंड के सुदूर जंगल क्षेत्र में बुद्ध पूर्णिमा से चार दिवसीय 9 कुंडीय गायत्री यज्ञ का आयोजन हुआ। श्री नरेंद्र विद्यार्थी एवं श्री नकुल देव की टोली द्वारा सम्पन्न कराया गया यह कार्यक्रम लोगों में युग निर्माणी आस्था का संचार करने में बहुत सफल रहा।

उन दिनों प्रचण्ड गर्मी थी, लेकिन कलश यात्रा के दिन प्रातः रेकॉर्ड बारिश हुई, जिससे वातावरण तो यज्ञ के अनुकूल हुआ ही, यज्ञ के प्रभाव के प्रति लोगों में विश्वास भी बढ़ गया।

यज्ञ के तीसरे दिन दीपयज्ञ के समय 11 गाँवों के लोगों की भागीदारी रही, पांडाल छोटा पड़ गया। मुस्लिम भाइयों ने भी बड़ी श्रद्धा के साथ युगऋषि का संदेश सुना। कार्यक्रम रात्रि 10 बजे तक निर्धारित था, लेकिन लोगों की माँग पर उसे रात्रि 12.20 तक बढ़ाना पड़ा।

पूर्णाहुति के दिन 168 दीक्षा, 105 विद्यारम्भ, 38 मुण्डन सहित अनेक संस्कार हुए। 6 लोगों ने नशा छोड़ने का संकल्प लिया।

संत, शहीदों के जीवन पर बौद्धिक कार्यक्रम

कोटा। राजस्थान : 16 जून 2024 के दिन वेदमूर्ति, तपोनिष्ठ पं. श्रीराम आचार्य जी का महाप्रयाण दिवस एवं गुरु अर्जुन देव जी का शहीदी दिवस था। उसी दिन शहीद रामप्रसाद बिस्मिल की जयंती भी थी। गुरु तेगबहादुर मिलन केंद्र कोटा के तत्त्वावधान में गुरु नानक हाऊसिंग सोसायटी, कोटा में तीनों संत-शहीदों को श्रद्धाञ्जलि स्वरूप बौद्धिक कार्यक्रम हुआ, जिसकी अध्यक्षता चिकित्सक डॉ. हेमंत सोनी ने की।

श्री देवेंद्र कुमार सक्सेना ने अखिल विश्व गायत्री परिवार का प्रतिनिधित्व करते हुए परम पूज्य गुरुदेव के तपस्वी जीवन, सामाजिक उत्थान के लिए समर्पण तथा लोकमंगल के लिए की गई महान सेवाओं का विस्तृत परिचय दिया। उन्होंने बताया कि गायत्री के चौबीस महा पुरश्चरण करने वाले और 3500 पुस्तकों का लेखन करने वाले संभवतः वे दुनिया के एकमात्र संत हैं। श्री कमलेश कमल ने श्री गुरु अर्जुन देव जी एवं राम प्रसाद बिस्मिल के जीवन की प्रेरक घटनाओं पर प्रकाश डाला। उन्होंने बिस्मिल के काकोरी कांड का विशेष उल्लेख किया।

विचार क्रान्ति का विशिष्ट अभियान

देव स्थापना, पत्रिका विस्तार महायज्ञ

हजारीबाग। झारखण्ड

हजारीबाग जिले के चुरचू प्रखंड के चीचीकला में तीन दिवसीय एवं सरवाहा ग्राम में दो दिवसीय देव स्थापना एवं पत्रिका विस्तार दीप महायज्ञ का आयोजन हुआ। इन कार्यक्रमों में श्री नकुल देव प्रसाद शास्त्री के द्वारा संगीतमय कथा कही गई, जिसका मुख्य उद्देश्य युवा जागृति तथा मिशन की पत्रिकाओं के माध्यम से परम पूज्य गुरुदेव के विचारों को निरंतर जन-जन तक पहुँचाना था।

श्री नकुल देव प्रसाद शास्त्री ने अनेक कथा प्रसंगों के माध्यम से युवाओं को उनकी सामर्थ्य का बोध कराया, उन्हें उनके सामाजिक एवं राष्ट्रीय उत्तरदायित्वों से अवगत कराया। परम पूज्य के विचारों का महत्त्व समझाते हुए उन्होंने कहा कि ये विचार अत्यंत क्रान्तिकारी हैं, जो इन्हें पढ़ेगा, वह बदल कर ही रहेगा।

ब्रह्मभोज एवं निःशुल्क सेवाएँ

दोनों कार्यक्रमों में सैकड़ों घरों में देव स्थापना कराई गई। लगभग 50 लोगों को युग निर्माण योजना पत्रिका का सदस्य बनाया गया। अधिक से अधिक लोग पत्रिका के सदस्य बनें, गुरुदेव के विचारों को पढ़ें, इसलिए आधे मूल्य पर ही सदस्यता का अभियान चलाया जा रहा है।

श्री सुखदेव महतो (श्री शम्भु जी), डॉ. मनीष शर्मा, प्रवीण जी, बबिता कुमारी आदि ने मुख्य रूप से इन कार्यक्रमों का आयोजन किया।

प्रज्ञा अभियान पाक्षिक पत्रिका एवं युग निर्माण योजना पत्रिका की सैकड़ों प्रतियाँ लोगों में निःशुल्क वितरित की गईं।

वृक्षारोपण की प्रेरणा : श्रोताओं को वृक्षारोपण के लिए भी प्रेरित किया गया। उल्लेखनीय है कि श्री सुखदेव महतो एवं श्री नकुल जी कई वर्षों से स्वयं पौधे तैयार कर लोगों में निःशुल्क वितरित करते हैं और उनके माध्यम से वृक्षारोपण करवाते हैं।

परिव्राजक की अनुकरणीय आस्था

नाहर लागून। अरुणाचल प्रदेश : गायत्री शक्तिपीठ नाहर लागून पर विगत तीन वर्षों से समयदान कर रहे श्री अमित कुमार श्रीवास्तव ने अपनी श्रद्धा-सक्रियता का एक सराहनीय आदर्श प्रस्तुत किया है। उन्होंने अपनी सहयोग राशि से बचत कर शक्तिपीठ पर चल रहे निर्माण कार्य के लिए 1,51,111/- रुपए की राशि शक्तिपीठ के मुख्य ट्रस्टी श्रीमती नीलम रानी को समर्पित की।

बायें श्री अमित कुमार जी

पूर्वोत्तर जोन प्रभारी शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री एम.के. शर्मा ने उनके साहसिक कदम का अभिनन्दन किया। उन्होंने कहा कि ऐसे प्राणवान अग्रदूत ही परम पूज्य गुरुदेव के नवयुग की संरचना के संकल्पों को पूरा करने में राम के रींछ-वानर जैसी भूमिका निभाएँगे।

मलेशिया की राजधानी में योग दिवस मनाया

गायत्री परिवार ने साझा किए गुरुदेव-माताजी के विचार

विश्व योग दिवस का विशाल आयोजन और गायत्री परिवार द्वारा लगाया गया साहित्य स्टॉल

कुआलालंपुर। मलेशिया

कुआलालंपुर के प्रतिष्ठित बातू गुफा मंदिर में 21 जून 2024 के दिन 10वें अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस का कार्यक्रम बड़े उत्साह के साथ मनाया गया। लगभग 1000 योगाभ्यासियों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। मलेशिया में भारत के उच्चायुक्त श्री बी.एन. रेड्डी समारोह के मुख्य अतिथि थे। गायत्री परिवार-मलेशिया ने इस वर्ष की थीम 'स्वयं और समाज के लिए योग' की व्याख्या करते हुए परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के विचार साझा करने के लिए एक बुक स्टॉल लगाया था।

प्रतिभागियों ने इस कार्यक्रम को बहुत जानकारीपूर्ण और आकर्षक बताया। श्री सिबा पात्रो ने बताया कि लोगों ने इस कार्यक्रम को बहुत पसंद किया एवं इसे जीवन के प्रति अंतःदृष्टि प्रदान करने वाला कार्यक्रम बताया।

माँ गंगा और देवात्मा हिमालय की गोद में बसे आध्यात्मिक ऊर्जा केन्द्र नई टिहरी में

पाँच दिवसीय मौन साधना का सुअवसर

शिविर में भागीदारी के लिए यथाशीघ्र अपना पंजीयन करायें

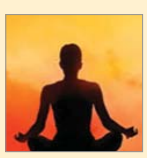

नई टिहरी की सबसे ऊँची पहाड़ी पर स्थित है गायत्री शक्तिपीठ। यह वह स्थान है जहाँ से गंगोत्री, यमुनोत्री, बद्रीनाथ, केदारनाथ चारों धामों की पर्वत शृंखलाओं के दर्शन प्राप्त होते हैं। नीचे माँ गंगा पर बनी भारत की सबसे बड़ी झील की दिव्य छटा है। जगद्गुरु शंकराचार्य ने टिहरी में रुककर लंबे समय तक साधना की थी। यह क्षेत्र सुरकुंडा देवी, कुँजापुरी इत्यादि माताओं के मंदिरों की दिव्य आध्यात्मिक ऊर्जा से ओतप्रोत है।

शान्तिकुञ्ज द्वारा इस दिव्य शक्तिपीठ में पाँच दिवसीय मौन साधना सत्रों की शृंखला आरंभ की गई है। जो परिजन इस दिव्य वातावरण में उच्च स्तरीय साधना करना चाहते हों, वे शान्तिकुञ्ज से संपर्क कर अपना पंजीयन करा सकते हैं।

विशेष ज्ञातव्य :

- साधना उच्च स्तरीय है, अतः पूर्व में साधना अनुष्ठानों के अभ्यासी परिजन ही आवेदन करें।
- शारीरिक या मानसिक दृष्टि से अक्षम या बीमार परिजनों को अनुमति प्रदान नहीं की जाएगी।
- प्रत्येक शिविर में केवल 24 साधक रहेंगे।
- शान्तिकुञ्ज से आने-जाने की व्यवस्था ट्रैवल एजेंसी के माध्यम से की गई है।

पंजीयन या अधिक जानकारी के लिए संपर्क करें:- श्री रमेश साहू- मो.नं. 9258369775, श्री आशुतोष मिश्र-मो.नं. 9258299655, श्री चिन्मय गुरुवंश-मो.नं. 7906679744

देव संस्कृति विश्वविद्यालय-शान्तिकुञ्ज आए विशिष्ट अभ्यागत

भारत आध्यात्मिक चेतना के प्रवाह का केन्द्र है।

- डॉ. असले टोजे, नॉर्वेजियन नोबल समिति के डिप्टी लीडर

भारत आध्यात्मिक चेतना के प्रवाह का केन्द्र है और यह मेरे हृदय के सबसे करीब है। भारत ने दुनिया को शांति का संदेश दिया है। शांति का यह संदेश मानवता और प्रकृति से जोड़ने के लिए आवश्यक है।

नॉर्वेजियन नोबल समिति के डिप्टी लीडर डॉ. असले टोजे ने दिनांक 28 जून को देव संस्कृति विश्वविद्यालय के मृत्युंजय सभागार में आयोजित विशिष्ट व्याख्यान माला को संबोधित करते हुए अपने उपरोक्त आत्मभाव व्यक्त किये। वे 'वसुधैव कुटुम्बकम्' विषय पर आयोजित व्याख्यान माला में मुख्य अतिथि के रूप में सभा को संबोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि भारत ने वैदिक संस्कृति के संवाहक के रूप में जो वसीयत संजोये रखी है, वह अतुलनीय है। उन्होंने अपने अनुभव साझा करते हुए युवाओं को बहुमूल्य प्रेरणाएँ दीं। उन्होंने कहा कि मोबाइल फोन का उपयोग मनोरंजन के लिए ही नहीं, रचनात्मक कार्यों के लिए, संस्कृति को जानने तथा आत्मिक विकास के लिए करना चाहिए।

श्री टोजे दक्षिण एशियाई शान्ति एवं सुलह संस्थान तथा हस्त निर्मित पेपर उद्योग का निरीक्षण करते हुए

इससे पूर्व देसंविवि के प्रति कुलपति व संयुक्त राष्ट्र संगठन (यूएनओ) द्वारा विश्व शांति के लिए गठित अंतर्राष्ट्रीय सामाजिक आध्यात्मिक मंच के निदेशक डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने देसंविवि के कुलपिता युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी की वसुधैव कुटुंबकम् के भाव की विस्तृत व्याख्या की। उन्होंने कहा कि एकता, समता, शुचिता एवं ममता गायत्री परिवार का मुख्य आधार है।

माननीय प्रति कुलपति जी ने डॉ. टोजे को गायत्री मंत्र की चादर, रुद्राक्ष की माला, स्मृति चिह्न आदि भेंटकर सम्मानित किया। इस अवसर पर कुलपति श्री शरद पारधी, कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन सहित समस्त विभागाध्यक्ष, देसंविवि व शान्तिकुञ्ज परिवार के अनेक कार्यकर्त्तागण उपस्थित रहे। मंच संचालन डॉ. इप्सित प्रताप सिंह व प्रथम पाटिल ने किया।

देसंविवि के विविध प्रकल्पों का अवलोकन

इससे पूर्व मुख्य अतिथि डॉ. टोजे ने देसंविवि में स्थापित एशिया के एकमात्र बाल्टिक सेंटर और दक्षिण एशियाई शांति-सुलह संस्थान का निरीक्षण किया। स्वावलम्बन केन्द्र को देखने के बाद उन्होंने युवाओं में स्वावलम्बन की प्रवृत्ति को बढ़ाने के देसंविवि के प्रयासों की सराहना की। विश्वविद्यालय द्वारा भारतीय संस्कृति एवं विश्व में शांति के लिए चलाई जा रही गतिविधियों पर प्रसन्नता व्यक्त की, स्वरोजगार को प्रेरित करने वाली स्वावलंबन कार्यशाला का अवलोकन भी किया।

■ शान्तिकुञ्ज की होनहार प्रतिभाएँ

देसंविवि में चि. देवस्य देसाई ने की हवा की गुणवत्ता की निगरानी हेतु संयंत्र की स्थापना की

''यह संयंत्र ग्रामीण समुदायों के लिए बहुत उपयोगी होगा, लोगों को स्वास्थ्य एवं अन्य गतिविधियों से संबंधित नीति निर्धारण में बहुत सहायता करेगा।''

– आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

स्मार्ट तकनीक से बदलते युग में इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT) एक शान्त क्रान्ति मानी जा रही है। शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता श्री कीर्तन देसाई एवं श्रीमती पद्मा देसाई के सुपुत्र चि. देवस्य ने इस तकनीक का उपयोग करते हुए देव संस्कृति विश्वविद्यालय में हवा की गुणवत्ता की निगरानी रखने वाले एक संयंत्र की स्थापना की है। विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने चि. देवस्य के इस शोध को एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि बताया। उन्होंने कहा कि यह संयंत्र ग्रामीण समुदायों के लिए बहुत उपयोगी होगा, लोगों को स्वास्थ्य एवं अन्य गतिविधियों से संबंधित नीति निर्धारण में बहुत सहायता करेगा।

चि. देवस्य देसाई इन दिनों अहमदाबाद विश्वविद्यालय में कम्प्यूटर साइंस में प्रथम वर्ष का विद्यार्थी है। वह अवकाश के दिनों में शान्तिकुञ्ज आया हुआ था। अपने मिशन के प्रति अनन्य आस्था रखने वाले चि. देवस्य ने अपने समय का सदुपयोग करते हुए इस संयंत्र की स्थापना की है।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी चि. देवस्य देसाई का उत्साहवर्धन करते हुए

चि. देवस्य ने बताया कि यह वायु की गुणवत्ता परखने वाले सेंसर से लैस एक ट्रांसमीटर मॉड्यूल है। यह तापमान, आर्द्रता, बैरोमीटर का दबाव, गैस सामग्री और कण पदार्थ जैसे पर्यावरणीय डेटा एकत्र करता है और उस डेटा को लोरावन प्रोटोकॉल के माध्यम से अपने रिसीवर मॉड्यूल को प्रेषित करता है। इससे क्षेत्र की वायु गुणवत्ता की अत्यंत प्रामाणिक जानकारी प्राप्त होती है। यह अत्यंत कम खर्चे वाला और बहुत मामूली बिजली की खपत वाला संयंत्र है।

श्रद्धेया शैल जीजी और श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी ने भी अपने परिवार की उदीयमान प्रतिभा के कौशल और मिशन के प्रति समर्पण भाव की खूब-खूब सराहना की एवं उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभाशीष प्रदान किए।

भारत के निर्वाचन आयुक्त सपरिवार शान्तिकुञ्ज पधारे

भारत के निर्वाचन आयुक्त श्री ज्ञानेश कुमार दिनांक 19 जून 2024 को सपरिवार गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आए। राष्ट्र के नवनिर्माण के लिए समर्पित देव संस्कृति विश्वविद्यालय की गतिविधियों को समझा, शान्तिकुञ्ज आकर परम पूज्य गुरुदेव एवं परम वंदनीया माताजी के स्मारकों पर पुष्पांजलि अर्पित की तथा श्रद्धेया शैल जीजी से भेंट की।

देसंविवि आगमन पर प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने माननीय अतिथियों का पुष्पगुच्छ आदि भेंटकर भावभरा स्वागत किया। उन्हें एशिया के प्रथम बाल्टिक केंद्र एवं स्वावलंबन केन्द्र सहित विश्वविद्यालय के विभिन्न प्रकल्पों की गतिविधियों से अवगत कराया। उन्हें बताया कि यह विश्वविद्यालय समाज एवं राष्ट्र के लिए जीने की आकांक्षा रखने वाले सुशिक्षित, सुशील, स्वावलंबी, सेवाभावी युवाओं के निर्माण के लिए समर्पित है। यहाँ विद्यार्थियों को बेहतर भविष्य के लिए नए और आधुनिक मंच प्रदान किए गए हैं। आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने मुख्य चुनाव आयुक्त को राष्ट्रीय एवं अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर मिली सफलताओं एवं संभावनाओं से भी अवगत कराया।

श्रद्धेया शैल जीजी द्वारा और आद. डॉ. चिन्मय जी द्वारा श्री ज्ञानेश कुमार जी के परिवार का स्वागत

श्रद्धेया शैल जीजी से मुलाकात

श्रद्धेया शैल जीजी ने श्री ज्ञानेश कुमार जी और उनके परिवार के साथ आत्मीयतापूर्वक भेंट की। मंगल तिलक कर उन्हें उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ दीं, गायत्री महामंत्र चादर ओढ़ाकर तथा युगऋषि की विचार संजीवनी-उनका साहित्य भेंट कर सम्मानित किया।

गतिविधियों को सराहा

माननीय श्री ज्ञानेश कुमार जी ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय के उद्देश्य, योजनाओं और गतिविधियों के साथ अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा चलाए जा रहे राष्ट्रव्यापी नशा उन्मूलन, वृक्षगंगा अभियान, बाल संस्कारशाला, पर्यावरण संरक्षण जैसे समाज के उत्थान के लिए समर्पित विविध कार्यक्रमों की सराहना की।

सन् 1973 से गायत्री परिवार से जुड़े हैं

माननीय श्री ज्ञानेश कुमार ने बताया कि उनकी माताजी ने सन् 1973 में शान्तिकुञ्ज में परम पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी से दीक्षा ली थी। उसी समय से उनका पूरा परिवार गायत्री परिवार से पूरे समर्पित भाव के साथ जुड़ा है।

विभिन्न प्रान्तों में बनाए 8 केन्द्रों पर 25 राज्यों के 1500 विद्यार्थियों ने दी प्रवेश परीक्षा

देसंविवि में दिनांक 30 जून 2024 को वर्ष 2024-25 सत्र के लिए प्रवेश परीक्षा का आयोजन हुआ। विवि. प्रशासन द्वारा यह प्रवेश परीक्षा हरिद्वार, नोएडा, भोपाल, लखनऊ, पटना, कोलकाता, नागपुर और राजनांदगाँव केन्द्रों में एक साथ आयोजित की गई थी। कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन ने बताया कि इस परीक्षा में 35 पाठ्यक्रमों में प्रवेश पाने के लिए कुल 1550 विद्यार्थियों ने परीक्षा दी।

श्री देवांगन जी ने बताया कि देसंविवि अपनी महान सांस्कृतिक विरासत तथा परम पूज्य गुरुदेव के उदात्त आदर्शों की बुनियाद पर नैतिकता सम्पन्न सच्चरित्र विद्यार्थियों को गढ़ने के लिए प्रयत्नशील है। यहाँ अध्ययन करना पूरे देश के युवाओं का सपना होता है। इस वर्ष युवाओं का सपना है देव संस्कृति विश्वविद्यालय में अध्ययन करना

प्रवेश परीक्षा में देश के 25 राज्यों के विद्यार्थी शामिल हुए।

देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने सभी विद्यार्थियों को शुभकामनाएँ दीं। उन्होंने कहा कि यहाँ के विशिष्ट पारिवारिक वातावरण में विद्यार्थियों के जीवन के विकास की सभी संभावनाएँ विद्यमान हैं। कुलपति श्री शरद पारधी ने भी छात्र-छात्राओं को शुभकामनाएं दी।

डॉ. अतुल कोठारी, राष्ट्रीय सचिव, शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली

शिक्षा संस्कृति उत्थान न्यास, नई दिल्ली के राष्ट्रीय सचिव डॉ. अतुल कोठारी दिनांक 26 जून को देव संस्कृति विश्वविद्यालय पधारे। माननीय प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने डॉ. कोठारी और उनकी टीम का हार्दिक अभिनंदन किया। परस्पर चर्चा में डॉ. कोठारी की टीम ने देसंविवि के शैक्षिक कार्यक्रमों और उनके द्वारा विद्यार्थियों में सांस्कृतिक मूल्यों को बढ़ाने के तरीकों का अध्ययन किया। उन्होंने अपनी गहन अंतःदृष्टि और सहयोगात्मक भावना के आधार पर समग्र शिक्षा और सांस्कृतिक उत्थान के लिए देसंविवि की प्रतिबद्धता को परखा और सराहा।

डॉ. कोठारी और उनके साथी माननीय प्रति कुलपति जी से चर्चा करते हुए

गुरुसत्ता की सूक्ष्म चेतना में विलीन हो गए शान्तिकुञ्ज के समर्पित कार्यकर्त्ता

श्री रामप्रसाद कुशवाहा

शान्तिकुञ्ज के जीवनदानी कार्यकर्त्ता श्री रामप्रसाद कुशवाहा का दिनांक 16 जून 2024 के दिन 64 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। वे विगत 20-25 वर्षों से सपरिवार शान्तिकुञ्ज में सेवाएँ प्रदान कर रहे थे। मध्य प्रदेश के गुना जिला में कुंभराज के मूल निवासी श्री कुशवाहा जी ने परिवहन विभाग में एक आदर्श कार्यकर्त्ता के रूप में अपनी अविस्मरणीय सेवाएँ प्रदान की।

स्व. श्री रामप्रसाद कुशवाहा जी के सम्मान में गुण निवेदन सभा का आयोजन हुआ, जिसमें परिवहन विभागाध्यक्ष श्री अवधेश पाण्डेय, श्री पद्माकर लांजेवार सहित अनेक लोगों ने अपने भाव व्यक्त किये। सभी ने कहा कि दिवंगत श्री कुशवाहा जी समय की पाबंदी, पवित्रता, सबके साथ समन्वयपूर्ण कुशल व्यवहार जैसे विशिष्ट गुणों के लिए शान्तिकुञ्ज परिवार द्वारा हमेशा याद किए जाएँगे। वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री श्याम बिहारी दुबे जी ने उन्हें गुरुजी का अनमोल कोहिनूर कहकर उनके अनुकरणीय व्यक्तित्व पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर स्व. श्री कुशवाहा जी की धर्मपत्नी श्रीमती रामस्वरूपी देवी, सुपुत्र बनवारी एवं चंद्रेश तथा सुपुत्री लक्ष्मी भी उपस्थित थे।

सत्य, तप, अहिंसा, ज्ञान, विद्वानों का सत्कार और शीलता ये गुण जिसमें हैं, वह विद्वान (पण्डित) है, केवल शास्त्र पढ़ने वाला नहीं।

नियमित योग साधना से मानवीय क्षमताओं का निरंतर विकास होता है। - श्रद्धेय डॉ. प्रणव जी

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस-21 जून के दिन शान्तिकुञ्ज में आदरणीय डॉ. चिन्मय जी की उपस्थिति में आयोजित हुआ योगाभ्यास का विशाल कार्यक्रम

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में 21 जून को भरपूर श्रद्धा और उल्लास के साथ 10वाँ अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस मनाया गया। देवात्मा हिमालय मंदिर प्रांगण में विशाल योग महोत्सव का आयोजन हुआ। इसमें देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या सहित विश्वविद्यालय के आचार्य, अधिकारी, विद्यार्थी, गायत्री विद्यापीठ के विद्यार्थी, शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ता, शिविरार्थी साधक सभी ने राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप योगाभ्यास कर भारत की अनमोल विरासत 'योग साधना' के प्रति अपनी गहन आस्था का प्रदर्शन किया।

योग दिवसोत्सव का शुभारंभ आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी, शान्तिकुञ्ज के वरिष्ठ कार्यकर्त्ता श्री शिवप्रसाद मिश्र जी द्वारा दीप प्रज्वलन-देवपूजन के साथ हुआ। अखिल विश्व गायत्री परिवार के प्रमुख श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या ने अपना संदेश दिया। उन्होंने सभी से योग को अपने दैनंदिन जीवन का अंग बनाने और नियमित अभ्यास करने की प्रेरणा दी। उन्होंने कहा कि नियमित योग साधना से मानवीय क्षमताओं का निरंतर विकास होता है।

गायत्री उपासना योग साधना का सर्वोच्च पथ

यूथ आइकॉन डॉ. चिन्मय पण्ड्या ने कहा कि योग साधना भारतीय ज्ञान की सर्वोच्च विरासत है। आज पूरा विश्व योग की गंगा में स्नान कर रहा है। गायत्री उपासना को योग साधना का एक अनिवार्य चरण बताते हुए उन्होंने कहा कि माँ गायत्री अजपा हैं, जो योगियों, संतों और साधकों को मोक्ष देती हैं। साधना का यह सर्वोच्च पथ है।

योग दिवसोत्सव में संगीत विभाग के भाइयों द्वारा प्रस्तुत प्रज्ञा गीतों ने योगाभ्यासियों के तन, मन में उच्च स्तरीय आस्था और उमंगों का संचार किया। देसंविवि के आचार्य श्री रामावतार पाटीदार ने अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप अभ्यास कराते हुए प्रत्येक आसन के लाभ और बारीकियों की जानकारी दी।

शान्तिकुञ्ज के योगाचार्यों ने अमेरिका, कनाडा, इंग्लैण्ड सहित विश्व के कई देशों में योग कराया

अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस पर अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा देश-विदेशों में अत्यंत उत्साहवर्धक सक्रियता दिखाई गई। अमेरिका में प्रो. विश्वप्रकाश त्रिपाठी एवं श्री सुरेन्द्र वर्मा की टोली ने, इंग्लैण्ड में श्री परमानंद द्विवेदी, डॉ. शिवनारायण प्रसाद, श्री दिलथीर यादव की टोली ने तथा कनाडा में प्रो. प्रमोद भटनागर एवं ओंकार पाटीदार ने योगाभ्यास कराया। ऑस्ट्रेलिया, सिंगापुर, वियतनाम, रशिया, मॉरीशस, चीन, दक्षिण अफ्रीका आदि देशों में देसंविवि व शान्तिकुञ्ज से प्रशिक्षित योगाचार्यों ने अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुसार योगाभ्यास कराया।

'प्रकृति आधारित स्वास्थ्य पर्यटन' पर दुनिया में बढ़ रहा है आकर्षण

देव संस्कृति विश्वविद्यालय द्वारा की गई है पहल

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पर्यटन विभाग ने प्रकृति पर आधारित पर्यटन के क्षेत्र में शोधकार्य की पहल की थी। पर्यटन विभाग के डॉ.अरुणेश पाराशर ने 'उत्तराखण्ड में स्वास्थ्य पर्यटन के स्वरूप का समीक्षात्मक अध्ययन, ऋषिकेश के विशेष संदर्भ में (प्रकृति आधारित स्वास्थ्य पर्यटन)' पर शोधकार्य किया था, जिसका प्रकाशन सन् 2012 में हुआ था। तत्पश्चात् सन् 2021 में कु. प्राची अग्रवाल ने 'उत्तराखण्ड में प्रकृति आधारित स्वास्थ्य पर्यटन का प्रभाव, ऋषिकेश, हरिद्वार के विशेष संदर्भ में' विषय पंजीकृत कराया। इसके अंतर्गत अब तक पाँच शोध पत्र लिखे जा चुके हैं।

डॉ. अरुणेश पाराशर ने बताया कि युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी ने कहा है कि 21 वी सदीं में प्रगतिशीलता की दौड़ में दौड़ रहे मानव को पीछे लौटना होगा और प्रकृति के नियमों का पालन करना होगा। इस भविष्य कथन से ही उन्हें इस दिशा में शोध की प्रेरणा मिली। डॉ. अरुणेश जी ने बताया कि यह पहला शोधकार्य था जिसमें प्रकृति पर आधारित स्वास्थ्य पर्यटन की अवधारणात्मक रूपरेखा रखी गयी।

देव संस्कृति विश्वविद्यालय के पर्यटन विभाग ने बताया कि प्रकृति आधारित शोधकार्य अब अंतर्राष्ट्रीय विद्वानों को भी आकर्षित कर रहे हैं। इटली, यू.के, यू. एस.ए. के लेखकों द्वारा एक पुस्तक लिखी गई है 'नेचर बेस टूरिज्म एण्ड वेलनेस'। इसका एक अध्याय विशुद्ध रूप से प्रकृतिगत स्वास्थ्य पर आधारित है, जैसे फॉरेस्ट, हेल्थ एण्ड टूरिज्म, डवलपमेंट ऑफ सस्टेनेबल हैल्थ, मॉडल फॉर नेचरबेस हेल्थ, टूरिज्म इन ऑस्ट्रिया।

प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्डया जी ने कहा कि देव संस्कृति विश्वविद्यालय का यह कार्य अतुलनीय है। भारतीय संस्कृति में मनीषियों ने समाज को प्रकृति के साथ जीने और सदैव स्वस्थ रहने की तकनीकें बताई हैं।

मोक्ष की सहज प्राप्ति

यदि तुम्हारा अहंकार चला गया है तो किसी भी धर्म पुस्तक की एक पंक्ति पढ़े बिना, किसी भी मन्दिर में पैर रखे बिना, जहाँ बैठे हो वहीं तुमको मोक्ष प्राप्त हो जाएगा।

- स्वामी विवेकानन्द

निहंग सिक्ख समाज एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय का समागम

गायत्री परिवार व निहंग समाज का मिलन एक आध्यात्मिक संगम है। - माननीय राज्यपाल

- सिक्ख और सनातन का मिलन पराक्रम, पवित्रता और संवेदना का मिलन है। - *डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी*
- सिक्ख और सनातन का संबंध अटूट है। - *बाबा हरजीत सिंह रसूलपुर*

माननीय राज्यपाल को गुरु गोविंद सिंह का चित्र भेंट करते देसंविवि के प्रति कुलपति मा. डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं बाबा हरजीत सिंह रसूलपुर

देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 22 जून 2024 को सिक्ख समाज एवं सनातन संस्कृति का विशिष्ट समागम हुआ, जिसकी अध्यक्षता उत्तराखण्ड के माननीय राज्यपाल ले.ज. (से.नि.) श्री गुरमीत सिंह ने की। उन्होंने अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में कहा कि गायत्री परिवार व निहंग समाज का यह मिलन एक आध्यात्मिक संगम है। उन्होंने कहा कि यह नई पीढ़ी में साहस, शौर्य और पराक्रम जगाने का समागम है। भगवान शिव और गुरुगोविन्द सिंह जी ने मानवता और भाईचारा के लिए जो संदेश दिया, वह एक समान है। इस समागम से राष्ट्र निर्माण की एक नई धारा बहेगी।

समागम का शुभारंभ माननीय राज्यपाल लेफ्टिनेंट जनरल (सेवानिवृत्त) श्री गुरमीत सिंह, देसंविवि के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या एवं फकीर सिंह खालसा के आठवें वंशज निहंग समाज के प्रतिनिधि, अयोध्या राम मंदिर लंगर वाले के प्रमुख जत्थेदार बाबा हरजीत सिंह रसूलपुर ने किया। इस समागम में बाबा हरजीत सिंह रसूलपुर के साथ आए निहंग समाज के लगभग 45 प्रतिनिधि, देव संस्कृति विवि. और विभिन्न राज्यों से आये गायत्री साधक उपस्थित रहे।

श्रद्धेया शैल जीजी बाबा हरजीत सिंह को युग साहित्य भेंट करते हुए

आरंभ में माननीय प्रति कुलपति जी ने माननीय राज्यपाल और निहंग समाज के प्रतिनिधियों का भावभरा स्वागत किया। उन्होंने अपने स्वागत उद्बोधन में सिक्ख और सनातन के मिलन को साहस, शौर्य, पराक्रम और पवित्रता, प्रखरता, संवेदना का मिलन बताया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भारत को अक्षुण्ण बनाये रखने में सिक्ख समाज के योगदान पर प्रकाश डाला। उन्होंने राष्ट्र के निर्माण में गुरुओं की भूमिका का उल्लेख करते हुए कहा कि यह समय सावधान होने का है। कबीर, गुरु गोविन्द सिंह, पं. श्रीराम शर्मा आचार्य, स्वामी विवेकानंद जैसे गुरुओं ने इंसान को इंसान बनाने के लिए ज्ञान की गंगा बहाई है। सद्गुरु की कृपा से जन्म-जन्मांतरों के कुकर्मों का नाश होता है।

बाबा हरजीत सिंह रसूलपुर ने कहा कि आज जो संबंध स्थापित हुए हैं, यह हम दोनों के लिए महत्त्वपूर्ण हैं। सिक्ख और सनातन के संबंध अटूट हैं। उन्होंने कहा कि गायत्री परिवार की सहजता, पवित्रता और उसका अनुशासन नये युग के आगमन का शुभ संकेत है।

समापन से पूर्व राज्यपाल जी ने प्रज्ञागीतों का (कुमांउनी), ई न्यूज लेटर रिनांसा, धन्वंतरी पत्रिका, संस्कृति संचार आदि का विमोचन किया। प्रति कुलपति जी ने माननीय राज्यपाल को स्मृति चिह्न भेंटकर सम्मानित किया।

देसंविवि. में माननीय राज्यपाल श्री गुरमीत सिंह ने देश की सुरक्षा में अपना सर्वोच्च बलिदान देने वाले वीर सैनिकों की याद में बनी शौर्य दीवार पर पुष्पांजलि अर्पित की।

निहंग सिक्ख समाज की संगत का भव्य स्वागत

फकीर सिंह खालसा के आठवें वंशज, अयोध्या राम मंदिर लंगर वाले के प्रमुख जत्थेदार, निहंग समाज के प्रतिनिधि बाबा हरजीत सिंह रसूलपुर जी और निहंग समाज से लगभग 45 सदस्यों का दिनांक 21 जून 2024 को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में आगमन हुआ। देसंविवि के कुलपति आदरणीय श्री शरद पारधी जी, प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एवं कुलसचिव श्री बलदाऊ देवांगन जी ने सबको मंत्र चादर से भेंट कर सबका भावभरा स्वागत किया। उन्हें शान्तिकुञ्ज और देव संस्कृति विश्वविद्यालय का परिचय देते हुए परम पूज्य गुरुदेव के विचार और योजनाओं की जानकारी दी।

- 21 जून को जत्थेदार बाबा हरजीत सिंह रसुलपुर जी और उनकी संगत का देव संस्कृति विश्वविद्यालय में स्वागत।
- 21 जून को देसंविवि स्थित प्रज्ञेश्वर महाकाल का दर्शन-पूजन।
- 22 जून को शान्तिकुञ्ज में यज्ञ किया।
- श्रद्धेया शैल जीजी से भेंट की।
- तत्पश्चात् गायत्री परिवार के साधकों के संग झूमते -गाते भव्य शोभायात्रा के साथ सिक्ख-सनातन समागम में भाग लेने देव संस्कृति विश्वविद्यालय पहुँचे।

डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा मंगल तिलक, तत्पश्चात् प्रज्ञेश्वर महादेव मंदिर में पहुँची सिक्ख संगत

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित।
संपादक- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार भेजने के लिए
ई-मेल : news@awgp.org

Publication date: 12.07.2024
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26